जुलाई-२०१९ ◆ वर्ष ८ ◆ अंक ०२ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

जुलाई-२०१९

दयानन्द का मत है मित्रो,
व्यर्थ नहीं ईश्वर के काम।
सभी लोक सृष्टि-सक्षम हैं,
मान रहा अब विश्व तमाम॥

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹१० $१

श्रेष्ठ क्वालिटी की पहचान, एम डी एच मसाले हैं सारे भारत की शान

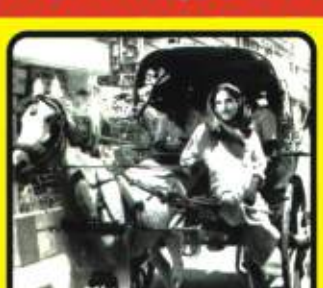

"एक तांगे वाला जो बना
मसालों का शहंशाह"

MDH मसाले असली मसाले सच - सच

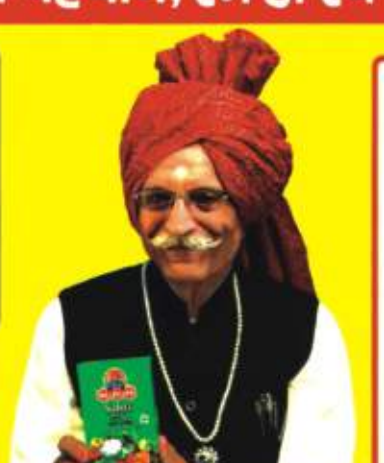

अन्य उत्कृष्ट उपयोगी उत्पादन

सोयाटीन वड़ियाँ हवन सामग्री हींग केसर दंत मंजन

MDH
Assorted Spices Box
GIFT PACK

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली -110015, 011-41425106-07-08
E-mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1000
आजीवन	-1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	- 400 रु.	$ 100
वार्षिक	- 100 रु.	$ 25
एक प्रति	- 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : 31010201004151 8
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२०
आषाढ़ शुक्ल पंचमी
विक्रम संवत्
२०७६
दयानन्दाब्द
१९५

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

कवर पृष्ठ : विश्व यू.एफ.ओ. दिवस

July - 2019

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन
3500 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

समाचार २८

हलचल २९

०४ वेद सुधा
०८ जीवेम शरदः शतं- डॉ. सोनी
०९ संस्कृत भाषा में निहित विपुल ज्ञान
१२ बच्चों के जीवन में कितना हस्तक्षेप
१४ देश की दिव्य नारियाँ
१७ स्मरणांजलि- स्वा. तत्त्वबोध सरस्वती
१८ परमाणु विवेचन
२० आओ स्वर्ग चलें
२२ रेन वाटर हार्वेस्टिंग
२३ सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०७/१९
२७ Story- The space women
३० सत्यार्थ पीयूष- तैंतीस देवता

स्वामी — श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ८ अंक - ०२

मुद्रण — द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 09829063110
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

हम उषाकाल में तेरी स्तुति करते हैं

तव व्रते सुभगासः स्याम स्वाध्यो वरुण तुष्टुवांसः।
उपायन उषसां गोमतीनामग्नयो न जरमाणा अनु द्यून्।। - ऋग्वेद २/२८/२

अर्थ- हे (वरुण) वरुण भगवान् (तुष्टुवांसः) तेरी स्तुति उपासना करनेवाले हम (स्वाध्यः) उत्तम विचारों वाले होकर (तव) तेरे (व्रते) नियम में रहते हुए (सुभगासः) सौभाग्यशाली (स्याम) बन जाएँ (गोमतीनाम्) सूर्य की किरणों वाली (उषसाम्) प्रभात वेलाओं के (उपायने) आने पर (न) जैसे (अग्नयः) अग्नियाँ, (प्रज्वलित हो उठती हैं) वैसे ही (अनुद्यून्) प्रतिदिन (जरमाणाः) आपकी स्तुति-उपासना करते हुए (हम भी चमक उठें)।

यदि हम सौभाग्य चाहते हैं तो हमें भगवान् के नियमों में रहकर चलना होगा। सौभाग्य का अर्थ होता है 'उत्तम भग की अवस्था'। ऐश्वर्य, धर्म, यश, शोभा, ज्ञान और वैराग्य- इन पदार्थों को 'भग' कहते हैं। जिस जीवन में यह छहों वस्तुएँ प्राप्त होंगी वह सौभाग्य का जीवन कहलाएगा। यह सौभाग्य का जीवन प्रभु के नियमों में रहकर चलने से प्राप्त होता है। प्रभु ने व्यक्ति और समाज के लिए जड़ जगत् और आत्मिक जगत् के लिए- सभी के लिए अनेक प्रकार के नियम बना रखे हैं। जो इन नियमों के अनुकूल चलेगा वह उनसे लाभ उठाकर सौभाग्यशाली बन जाएगा।

प्रभु के नियमों में रहकर चलने के लिए उत्तम विचारों की आवश्यकता है। बिना उत्कृष्ट विचारों के आदमी से कठोर नियम-पालन का जीवन व्यतीत नहीं हो सकता। अपने विचारों को उत्कृष्ट बनाने के लिए हमें प्रभु का 'तुष्टुवान्'- स्तुति करनेवाला बनना चाहिए। उसकी स्तुति-उपासना के द्वारा हमारे अन्दर अपने प्यारे उस प्रभु के गुण आ जाते हैं और हम प्रभु के नियमों में रहकर चलने के योग्य बन जाते हैं। दूसरे शब्दों में प्रभु के गुणों को जीवन में धारण कर लेना ही प्रभु के नियमों पर चलना है।

प्रभु की उपासना का, प्रेम में भरकर उसके गुण गाने का उपयुक्त समय कौन-सा है? इसके लिए कहा कि जब सूर्य की किरणें उषःकाल बनाती हैं, वह प्रभु की उपासना का सर्वोत्तम काल है। उस समय अग्निहोत्र के लिए प्रज्ज्वलित की गई अग्नियाँ जैसे चमक रही होती हैं, वैसे ही उस समय की गई उपासना द्वारा हमारा आत्मा भी पवित्र होकर चमक उठता है। काल का, अर्थात् सूर्य के प्रकाश की अवस्था-विशेषों का भी हमारी चित्तवृत्तियों पर विशेष-विशेष प्रभाव पड़ता है। सूर्य का उषःकालीन प्रकाश हमारे अन्दर आध्यात्मिक चित्तवृत्तियों को, प्रभु-प्रेम और पवित्रता की मनोभावनाओं को उत्पन्न करता है, इसलिए प्रभु-ध्यान का सर्वोत्तम काल वही है। उस समय हमें अग्निहोत्र और सन्ध्या दोनों यज्ञों द्वारा प्रभु की उपासना करनी चाहिए, मन्त्र के उत्तरार्द्ध से यह ध्वनि निकलती है।

हे मेरे आत्मन्! तू भी उषःकाल में प्रभु के उज्ज्वल गुणों का स्मरण करके अपने को अग्नि की तरह चमका ले।

- आचार्य प्रियव्रत जी
साभार (वरुण की नौका)

आत्म निवेदन

बिन पानी सब सून

–आयें शपथ लें–
तीन लीटर पानी रोज बचाएँ

जीवन की कल्पना जल के बिना नहीं की जा सकती। संसाधनों के अंधाधुंध दोहन और असंयमित उपभोग ने हमें उस स्थिति में ला खड़ा किया है कि मनुष्य बूँद-बूँद पानी के लिए तरस जाएगा। बढ़ती जनसंख्या ने इसे और विकट बना दिया है। अब विश्वभर में इस भयावह स्थिति ने दस्तक दे दी है। दक्षिण अफ्रीका के केपटॉउन शहर में १२ अप्रैल २०१६ को जीरो डे घोषित कर दिया था। २०१८ में वहाँ हुयी अच्छी बारिश तथा पानी बचाने की कड़ी कोशिशों ने इस दिन को स्थगित कर तो दिया पर आखिर कब तक? भारत की स्थिति कहीं बेहतर नहीं है। एक आंकलन के अनुसार २०२० में भारत औपचारिक रूप से 'Water Stressed' श्रेणी में परिगणित कर लिया जावेगा, जहाँ प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता १००० cubic meter या उससे कम होगी। उधर सरकार की महत्वाकांक्षी योजना 'नल से जल' के अंतर्गत २०२४ तक प्रत्येक घर में पाइप लाइन की व्यवस्था करनी है ताकि उन्हें अपने घर में पीने योग्य पानी मिल सके। परन्तु पानी मिलेगा तो तब, जब उपलब्ध होगा। नीति आयोग की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत के २१ शहर, जिनमें दिल्ली, बैंगलोर, चेन्नई और हैदराबाद सम्मिलित हैं, में २०२० तक भूजल समाप्ति के कगार पर होगा, जिससे १० करोड़ लोग बुरी तरह प्रभावित होंगे।

आगामी मानसून कैसा होगा? सटीक अनुमान नहीं लगाया जा सकता। वर्षा अच्छी भी हो तो उन इलाकों में होती है या नहीं जो शहरों के झील तालाब के catchment एरिया हैं , यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। क्योंकि अगर वर्षा जलग्रहण-क्षेत्र में नहीं होती है तो इस कारण यह अमूल्य संपत्ति पूर्णतः विनष्ट हो जाती है क्योंकि इस जीवनदाता जल का महत्त्व न समझकर हमने इसे संग्रहित करने के साधन विकसित नहीं किये। वस्तुतः इसे हमने हमारा काम समझा ही नहीं। हमारी दृष्टि में यह सरकार का कार्य है कि हमें यथेष्ठ पानी दे। जब-जब पानी की कमी होती है हम सरकार को दोष देते हैं। परन्तु यह उचित नहीं। विश्व की कोई सरकार पानी का निर्माण नही कर सकती। हाँ यह अवश्य है कि सरकार दूरगामी योजना बनाकर इस प्रकार का infrastructure तैयार करे कि वर्षा-जल बर्बाद न हो, एक बूँद भी नहीं। हमारा निवेदन है कि इस महत्वपूर्ण कार्य को केवल सरकार पर न छोड़कर जल-संरक्षण के पवित्र कार्य में प्रत्येक नागरिक को अपनी सहभागिता दिखानी होगी। बड़े कार्य तो खैर सरकार ही करेगी, जैसे नदियों को आपस में जोड़ना। नदियों को जोड़ने की योजना पर सरकारों के बदलने के साथ ही विचार परिवर्तन भी होता रहा। परन्तु यदि यह संभव है (छोटे स्तर पर सफल प्रयोग हो चुका है। २०१५ में गोदावरी नदी को, १३०० करोड़ रुपये खर्च करके १७५ किलोमीटर की नहर के द्वारा कृष्णा नदी से जोड़ा जा चुका है, तथा गोदावरी का ८५०० क्यूबिक पानी जो बंगाल की खाड़ी में जाकर व्यर्थ हो जाता था उसे स्थानांतरित किया गया है।) तो जहाँ अक्सर बाढ़ प्रतिवर्ष तबाही

मचाती है वहाँ का अतिरिक्त जल, सूखा प्रभावित क्षेत्र तक भेजा जा सकता है। और बाढ़ तथा दुर्भिक्ष दोनों के दुष्परिणामों से बचा जा सकता है।

विश्वभर में बढ़ती गरमी से ग्लेशियर पिघल रहे हैं और पीने योग्य पानी तक समाप्त होने की दिशा में यह एक अतिरिक्त कारक बन गया है। कई प्रयोग भी हो रहे हैं। जैसे समुद्र के पानी को क्या पीने योग्य बनाया जा सकता है, इस पर अनुसंधान चल रहे हैं। चीन में sponge सिटी का प्रयोग किया जा रहा है जिसके अंतर्गत फुटपाथों को porous बनाकर तथा अधिकाधिक wetland बनाकर वर्षा जल को संचित करने का प्रयास किया जा रहा है।

यहाँ एक बात का संकेत और करदें कि विशेषज्ञ अभी भी यह मानते हैं कि धरती पर जल की मात्रा आज भी कमोवेश उतनी है जितनी २००० वर्ष पूर्व थी परन्तु यह रेखांकित करने वाली बात है कि तब हमारी आबादी आज की केवल ३ प्रतिशत थी। जनसंख्या-विस्फोट जल ही क्यों अनेक समस्याओं का मूल कारण है यह सदैव ध्यान रखना चाहिए।

इस आलेख को लिखते समय तक उदयपुर के अनेक इलाकों में तीन दिन में एक बार पानी दिया जा रहा है। इस कमी की पूर्ति टेंकर में पानी खरीदकर की जा रही है। पर टेंकर कहाँ से पानी लाता है? भूजल स्रोतों से। यह भूजल बहुत नीचे जा चुका है। सरकार को कोसने की कवायद प्रारम्भ हो गयी है। हो भी क्यों न? जल तो जीवन है। गरमी में उपलब्धता का ध्यान रखते हुए पानी की सरकारी सप्लाई कम कर दी जाती है और त्राहिमाम् मच जाता है।

आज हमारा मोहल्ला ही नहीं, हमारा नगर ही नहीं हमारा देश ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व जल की समस्या से भयंकर रूप से परेशान है। जल की समस्या का मूल कारण है- शहरी क्षेत्रों में लगातार बढ़ते शहरीकरण और औद्योगीकरण के कारण जल आपूर्ति की मांग बढ़ रही है। इसका कारण अत्यधिक भूमिगत जल का इस्तेमाल है जिससे ये नीचे की ओर जा रहा है। अगर तुरन्त कुछ प्रभावशाली कदम नहीं उठाये गये तो भविष्य में पानी की कमी का खतरा बड़े पैमाने पर बढ़ेगा और ये जीवन के लिये भी खतरा साबित हो सकता है।

ज्ञातव्य है कि एक आकड़े के अनुसार धरती पर एक अरब ४० घन किलो लीटर पानी है। ९७.५% पानी समुद्र में है, जो खारा है। बाकी १.५% पानी बर्फ के रूप में ध्रुव प्रदेशों में है। इसमें से बचा १% पानी नदी, सरोवर, कुओं, झरनों और झीलों में है, जो पीने के लायक है। इस १% पानी का ६०वाँ हिस्सा खेती और उद्योग कारखानों में खपत होता है, बाकी का ४०वाँ हिस्सा पीने, भोजन बनाने, नहाने, कपड़े धोने एवं साफ-सफाई में खर्च करते हैं। विश्व में प्रति १० व्यक्तियों में से २ व्यक्तियों को पीने का शुद्ध पानी नहीं मिल पाता है। जल को लेकर संयुक्त राष्ट्र ने चेतावनी दी है कि २०४० तक दुनिया में पानी की इतनी किल्लत होगी कि हर ४ में से १ बच्चा प्यासा रहेगा।

हम क्यों नहीं ध्यान रखते कि पानी प्रयोगशाला में नहीं बनता (कम से कम अभी तक तो)। तो जो भी पानी है वह भूमिगत स्रोतों से और वर्षा से ही प्राप्त होता है। हम सरकार पर तो अँगुली उठाते हैं पर अपनी ओर उठी शेष चार अँगुलियों पर ध्यान नहीं देते। अंधाधुंध दोहन ने भूमिजल सुखा दिया है। जल निरन्तर कम होता जा रहा है। जब हम वाटर पार्क में मजे ले रहे होते हैं अथवा शेविंग करते समय पानी की टोंटी खुली छोड़ देते हैं, टब या जकूजी में नहाकर ४ गुना ज्यादा पानी बर्बाद कर रहे होते हैं तो हमें भान भी नहीं होता कि हम दुनिया का सबसे भयानक अपराध कर रहे होते हैं।

जैसा मैंने कहा कि पानी तो वर्षा से ही मिल सकता है। यहाँ मैं यह नहीं कहता कि वर्षा हमारे हाथ में नहीं है। अगर हम अपनी विलासिता के लिए प्रकृति का दोहन न करें और उन सारे कारकों को संरक्षित करें जो पर्यावरण के संरक्षण के लिए आवश्यक हैं, साथ ही घर-घर अग्निहोत्र का प्रचार हो जाय, तो जैसा वेद में कहा है **'निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु.....'** अर्थात् हम जब-जब चाहें तब-तब वर्षा हो, सर्वथा संभव है। परन्तु हमारा व्यवहार इसके ठीक विपरीत है। हम अपने बच्चों को सब कुछ देना चाहते हैं पर उस ओर तनिक भी प्रयत्नशील नहीं हैं कि हमारे बच्चों को 'जीरो दिवस' का सामना न करना पड़े। वर्षा

जल की एक बूँद भी अमृत है। सरकारों की भी यह जिम्मेदारी है कि वह ऐसी योजनायें बनाएँ जिससे वर्षाजल अधिकाधिक संरक्षित हो, उसकी एक बूँद भी बेकार न जाय। जहाँ वर्षा ज्यादा हो वहाँ का पानी व्यर्थ न जाकर किस तरह कम वर्षा वाले इलाकों में जाय और इस प्रकार बाढ़ तथा सूखा जनित नुकसान न हो। इसके अतिरिक्त और भी कई मार्ग हो सकते हैं। महत्वपूर्ण यह है कि आने वाली वर्षा के कितने भाग को हम संरक्षित करते हैं, और कितने भाग को हम बेकार जाने देते हैं। बारिश के पानी को जितना ज्यादा हम जमीन के भीतर जाने देकर भूजल संग्रहण करेंगे उतना ही हम जल संकट को दूर रखेंगे। अतः आवश्यकता है वर्षा की एक-एक बूँद का भूमिगत संग्रहण करके भविष्य के लिए एक सुरक्षा निधि बनाई जाए। एक आँकड़े के अनुसार यदि हम अपने देश के जमीनी क्षेत्रफल में से मात्र ५ प्रतिशत में ही गिरने वाले वर्षा के जल का संग्रहण कर सके तो एक बिलियन लोगों को १०० लीटर पानी प्रति व्यक्ति प्रतिदिन मिल सकता है।

परन्तु यक्ष प्रश्न यह है कि हम क्या करेंगे? कुछ नहीं? जीरो दिवस का इंतजार? फिर सरकार के विरुद्ध आक्रोश? यह तो उचित नहीं है। जल की फिजूलखर्ची को एकदम बन्द कर, हमारे अपने घर पर जो वर्षा होती है उसकी एक-एक बूँद को सहेजना हम सभी का पुनीत कर्तव्य है। यह सारा वर्षा-अमृत व्यर्थ में न रहने पावे। इसको सहेजने का एक उत्तम साधन है 'रेन वाटर हार्वेस्टिंग'। जो निर्माण अब हो रहे हैं चाहे वह आपका घर हो या संस्थान, वहाँ यदि विश्वमानवता के प्रति अपराध बोध से बचना चाहते हैं तो, अनिवार्य रूप से 'रेन वाटर हार्वेस्टिंग' करवावें। जहाँ आप लाखों करोड़ों रुपये खर्च कर रहे हैं वहाँ कुछ हजार का क्या मूल्य है और देखा जाय तो यह खर्च भी आप अपने और अपने बच्चों के लिए ही कर रहे हैं। निर्माणाधीन मकान या संस्थानों में तो यह अत्यन्त सरल है परन्तु निर्मित हो चुके मकानों में भी हो सकता है।

जब तक यह अंक आप तक पहुँचेगा संभवतः वर्षा प्रारम्भ हो चुकी होगी। गत वर्ष काफी कम वर्षा हुयी थी। प्रभु से प्रार्थना करते हैं भारतभूमि को सर्वत्र यथायोग्य वर्षा-अमृत पिलाएँ। पर आप भी तैयारी कर लीजिये कि प्रभु का जितना अनुग्रह हो उसका एक कण भी व्यर्थ न जाय। आज कितने ही ऐसे हैं जिनके लिए 'रेन वाटर हार्वेस्टिंग' लगवाना चुटकी बजाने जितना आसान है बस अभी तक सोचा ही नहीं। अब सोचिये। न सिर्फ सोचिये बल्कि आज ही 'रेन वाटर हार्वेस्टिंग' लगवाने हेतु उद्योग करिए। उदयपुर के डॉ. पी.सी.जैन इस क्षेत्र में २० वर्षों से प्रयासरत हैं, उनका एक संक्षिप्त आलेख भी इसी अंक में दे रहे हैं।

प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी का सभी ग्राम सरपंचों को लिखा पत्र

'बारिश का मौसम शुरू होने वाला है। हम ईश्वर के आभारी हैं कि हमें पर्याप्त वर्षाजल का आशीर्वाद मिला है। हमें इसके संरक्षण के लिए सभी प्रयास और व्यवस्था करनी चाहिए। इस पानी को संग्रहित करने के तरीकों पर ग्राम सभाओं में चर्चा करें। मुझे पूरा भरोसा है कि आप सभी बारिश के पानी कि एक–एक बूँद को संग्रहित कर सकते हैं।

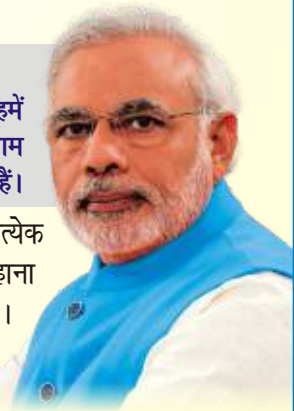

अपनी लेखनी को विराम देते हुए हम इतना अनुरोध अवश्य करते हैं कि इस संकट से जूझने हेतु प्रत्येक नागरिक अपना योगदान अवश्य देवे। आज से ही देवे। अगर आप शावर से नहाते हैं तो बाल्टी से नहाना प्रारम्भ कर दें। क्योंकि नवीनतम शावर तकनीक के अतिरिक्त सभी शावरों में पानी ज्यादा वेस्ट होता है। जो बाल्टी से नहाते हैं वे कम से कम तीन लीटर पानी नहाने के लिए कम भरें। क्योंकि नहा तो उतने से भी सकते हैं। आप सोच सकते हैं कि ३ लीटर पानी बचाने से क्या होगा? बहुत कुछ होगा। अगर ५ लाख आबादी वाले शहर में एक लाख लोग भी ऐसा करें तो तीन लाख लीटर पानी बचेगा जो निश्चित रूप से बड़ा आंकड़ा है और रोजाना लगभग ५०००० प्यासों की प्यास बुझाने में समर्थ है। हम जिस बाल्टी का प्रयोग करते हैं वह १३ लीटर की है। अब हमने ४ लीटर पानी कम कर दिया है। सच मानिए तनिक भी कठिनाई नही हो रही। वस्तुतः केवल आदत बदलने की आवश्यकता है। फिर सोचिये कम पानी से नहाना ज्यादा अच्छा है या पीने के लिए एक-एक बूँद के लिए तरसना। यकीन मानिए न संभले तो यह स्थिति आसन्न है।

– अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

माननीय डॉ. सुखदेवचन्द सोनी के जन्मदिन पर समर्पित

सद्गुण चमके, खान आप हैं

अनुभव के भण्डार आप हैं,
पुरुषार्थ के भावार्थ आप हैं।
ममता, स्नेह अरु आत्मीयता के,
सचमुच में व्याख्यान आप हैं।।

कितने ही सम्मान मिले,
श्रेष्ठता के प्रतिमान आप हैं।
देने का अभिमान नहीं है,
विनम्रता–भण्डार आप हैं।।

'सुख–सरोज' जैसे सुरभित हैं,
ईश्वर के वरदान आप हैं।
परोपकार में सदा समर्पित,
हम सबके अभिमान आप हैं।।

सूरज की पहली किरणों सा,
आनन्दमग्न एहसास आप हैं।
तप्त दुपहरी की गर्मी में,
शीतल मन्द समीर आप हैं।।

पाताल देश में दयानन्द की,
गाथा के उन्मान आप हैं।
वैदिक धर्म सभी तक पहुँचे,
इसके गौरव गान आप हैं।
ओ३म् पताका 'कर' में लेकर,
आर्यों के सम्मान आप हैं।।

पिच्चासी वीं जन्म–जयन्ती,
श्रेष्ठ–यज्ञ यजमान आप हैं।
सौ वर्षों तक आभा चमके,
भावना हमारी भाव आप हैं।
मिले स्वास्थ्य सुख शान्ति आपको,
इसके सच्चे पात्र आप हैं।।

प्रस्तुति– अशोक आर्य, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर

HAPPY 85TH BIRTHDAY

ज्ञान-विज्ञान का विपुल भंडार निहित है संस्कृत भाषा में

देश में एक ऐसा वर्ग बन गया है जो कि संस्कृत भाषा से तो शून्य है परन्तु उनकी छद्म धारणा यह बन गयी है कि संस्कृत भाषा में जो कुछ भी लिखा है वे सब पूजा पाठ के मंत्र ही होंगे जबकि वास्तविकता इससे भिन्न है। देखते हैं –

'चतुरस्रं मण्डलं चिकीर्षन्न् अक्षयार्धं मध्यात्प्राचीमभ्यापातयेत्।'
यदतिशिष्यते तस्य सह तृतीयेन मण्डलं परिलिखेत्।'

बौधायन ने उक्त श्लोक को लिखा है। इसका अर्थ है –

यदि वर्ग की भुजा 2a हो तो वृत्त की त्रिज्या $r=[a+1/3(\sqrt{2}a-a)]=[1+1/3(\sqrt{2}-1)]a$ ये क्या है?

अरे ये तो कोई गणित या विज्ञान का सूत्र लगता है।

शायद ईसा के जन्म से पूर्व पिंगल के छन्द शास्त्र में एक श्लोक प्रकट हुआ था। हालायुध ने अपने ग्रंथ मृतसंजीवनी में, जो पिंगल के छन्द शास्त्र पर भाष्य है, इस श्लोक का उल्लेख किया है–

'परे पूर्णमिति।'
'उपरिष्टादेकं चतुरस्रकोष्ठं लिखित्वा तस्याधस्तात् उभयतोर्धनिष्क्रान्तं कोष्ठद्वयं लिखेत्।
तस्याप्यधस्तात् त्रयं तस्याप्यधस्तात् चतुष्टयं यावदभिमतं स्थानमिति मेरुप्रस्तारः।'
'तस्य प्रथमे कोष्ठे एकसंख्यां व्यवस्थाप्य लक्षणमिदं प्रवर्तयेत्।
तत्र परे कोष्ठे यत् वृत्तसंख्याजातं तत् पूर्वकोष्ठयोः पूर्णं निवेशयेत्।'

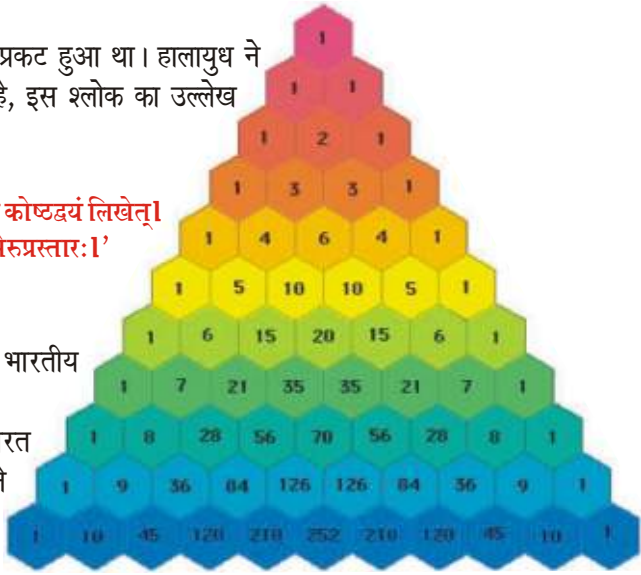

शायद ही किसी आधुनिक शिक्षा में Maths में B. Sc. किये हुए भारतीय छात्र ने इसका नाम भी सुना हो, जबकि यह 'मेरु प्रस्तार' है।

परन्तु जब ये पाश्चात्य जगत् से 'पास्कल त्रिभुज' के नाम से भारत आया तो उन कथित सेकुलर भारतीयों को शर्म इस बात पर आने लगी कि भारत में ऐसे सिद्धान्त क्यों नहीं दिये जाते।

'चतुराधिकं शतमष्टगुणं द्वाषष्टिस्तथा सहस्राणाम्।
अयुतद्वयस्य विष्कम्भस्यासन्नो वृत्तपरिणाहः।।'

ये भी कोई पूजा का मंत्र ही लगता है लेकिन ये किसी गोले के व्यास व परिधि का अनुपात है। जब पाश्चात्य जगत् से ये आया तो संक्षिप्त रुप लेकर आया ऐसा π जिसे २२/७ के रुप में डिकोड किया जाता है।

उक्त श्लोक को डिकोड करेंगे तो अंकों में तो कुछ इस तरह होगा–

(१००+४) x८+ ६२००० ÷ २०००० = ३.१४१६

'गोपीभाग्य मधुव्रातः श्रृंगशोदधि संधिगः।
खलजीवितखाताव गलहाला रसंधरः।।'

इस श्लोक को डीकोड करने पर ३२ अंकों तक π का मान ३.१४१५९२६५३५८९७९३२३८४६२६४३३८३२७९२ आता है।

'चक्रीय-चतुर्भुज का क्षेत्रफल'

ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त के गणिताध्याय के क्षेत्रव्यवहार के श्लोक १२.२१ में निम्नलिखित श्लोक वर्णित है-

'स्थूल-फलम् त्रि-चर्तुभुज-बाहु-प्रतिबाहु-योग-दल-घातस् ।'
भुज-योग-अर्ध-चतुष्टय-भुज-ऊन-घातात् पदम् सूक्ष्मम्।।'

अर्थः- त्रिभुज और चतुर्भुज का स्थूल (लगभग) क्षेत्रफल उसकी आमने-सामने की भुजाओं के योग के आधे के गुणनफल के बराबर होता है तथा सूक्ष्म (exact) क्षेत्रफल भुजाओं के योग के आधे में से भुजाओं की लम्बाई क्रमशः घटाकर और उनका गुणा करके वर्गमूल लेने से प्राप्त होता है।

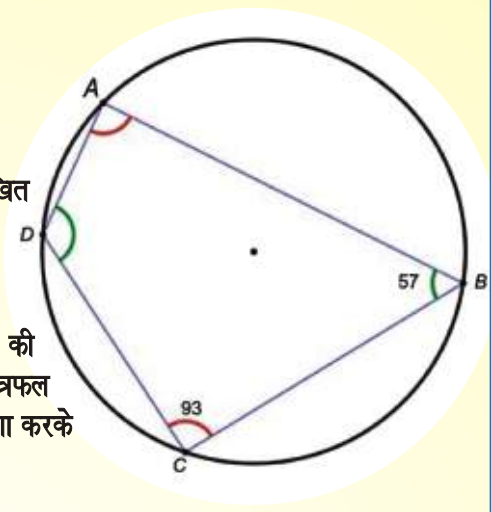

ब्रह्मगुप्त-प्रमेयः

चक्रीय चतुर्भुज के विकर्ण यदि लम्बवत् हों तो उनके कटान बिन्दु से किसी भुजा पर डाला गया लम्ब सामने की भुजा को समद्विभाजित करता है।

ब्रह्मगुप्त ने श्लोक में कुछ इस प्रकार अभिव्यक्त किया है-

'त्रि-भ्जे भुजौ तु भूमिस् तद्-लम्बस् लम्बक-अधरम् खण्डम्।
ऊर्ध्वम् अवलम्ब-खण्डम् लम्बक-योग-अर्धम् अधर-ऊनम्।।' (ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त, गणिताध्याय, क्षेत्रव्यवहार १२.३१)

वर्ग-समीकरण का व्यापक सूत्रः

ब्रह्मगुप्त का सूत्र इस प्रकार है-

'वर्गचतुर्गुणितानां रुपाणां मध्यवर्गसहितानाम् ।
मूलं मध्येनोनं वर्गद्विगुणोद्धृतं मध्यः।।'

(ब्राह्मस्फुट-सिद्धांत - १८.४४)

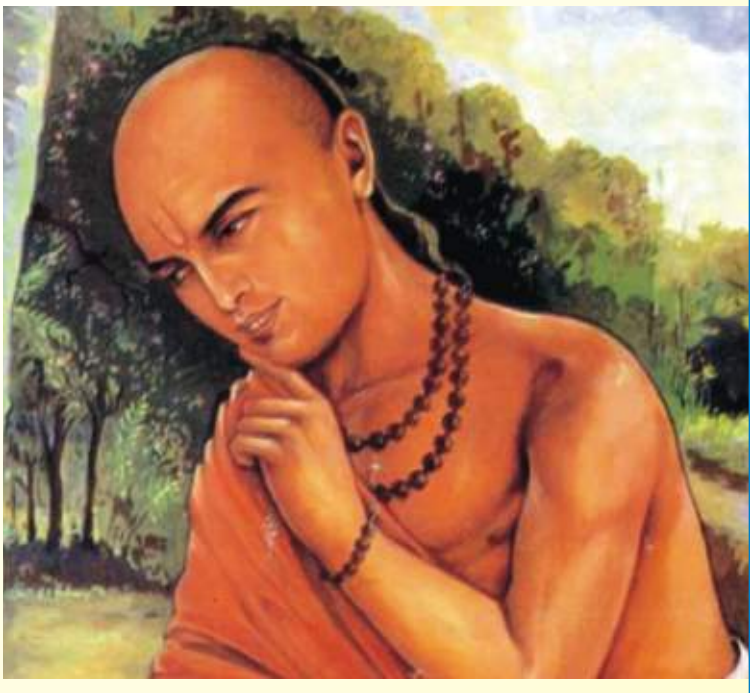

अर्थात्- व्यक्त रुप (c) के साथ अव्यक्त वर्ग के चतुर्गुणित गुणांक (4ac) को अव्यक्त मध्य के गुणांक के वर्ग (b^2) से सहित करें या जोड़ें। इसका वर्गमूल प्राप्त करें तथा इसमें से मध्य अर्थात् b को घटावें। पुनः इस संख्या को अज्ञात ञ वर्ग के गुणांक (a) के द्विगुणित संख्या से भाग देवें।

प्राप्त संख्या ही अज्ञात 'त्र' राशि का मान है।

श्रीधराचार्य ने इस बहुमूल्य सूत्र को भास्कराचार्य का नाम लेकर अविकल रुप से उद्धृत किया-

'चतुराहतवर्गसमैः रुपैः पक्षद्वयं गुणयेत्।
अव्यक्तवर्गरूपैर्युक्तौ पक्षौ ततो मूलम्।।'

- भास्करीय बीजगणित, अव्यक्त-वर्गादि-समीकरण, पृ. - २२१

अर्थात्- प्रथम अव्यक्त वर्ग के चतुर्गुणित रूप या गुणांक (4a) से दोनों पक्षों के गुणांको को गुणित करके द्वितीय अव्यक्त गुणांक (b) के वर्गतुल्य रूप दोनों पक्षों में जोड़ें। पुनः द्वितीय पक्ष का वर्गमूल प्राप्त करें।

आर्यभट्ट की ज्या (Sine) सारणी-

आर्यभटीय का निम्नांकित श्लोक ही आर्यभट की ज्या-सारणी को निरूपित करता है-

'मखि भखि फखि धखि णखि ञखि ङखि हस्झ स्ककि किष्ा श्घकि किघ्व l
घ्लकि किग्र हक्य धकि किच स्ग झश ङ्व क्ल प्त फ छ कला-अर्ध-ज्यास् ll'

माधव की ज्या सारणी–

निम्नांकित श्लोक में माधव की ज्या सारणी दिखायी गयी है। जो चन्द्रकान्त राजू द्वारा लिखित 'कल्चरल फाउण्डेशन्स आफ मैथमेटिक्स' नामक पुस्तक से ली गयी है।

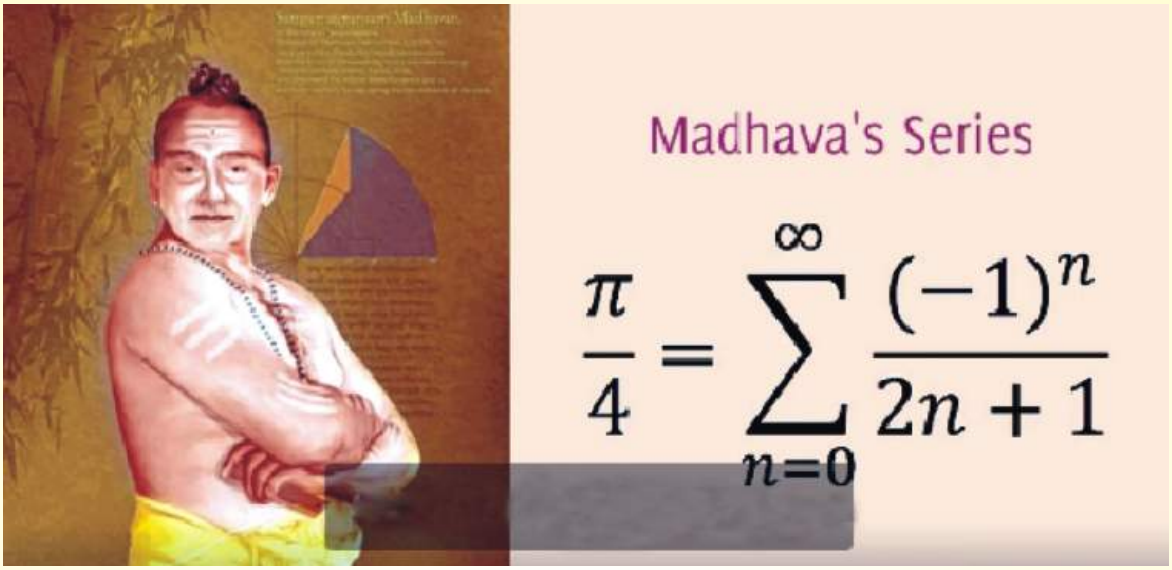

'श्रेष्ठं नाम वरिष्ठानां हिमाद्रिर्वेदभावनः l तपनोभानुसूक्तज्ञो मध्यमं विद्धि दोहनं ll
धिगाज्यो नाशनं कष्टं छत्रभोगाशयाम्बिका l म्रिगाहारो नरेशोऽयं वीरोरनजयोत्सुकः ll
मूलं विशुद्धं नालस्य गानेषु विरला नराः l अशुद्धिगुप्ताचोरश्रीः शंकुकर्णो नगेश्वरः ll
तनुजो गर्भजो मित्रं श्रीमानत्र सुखी सखे! l शशी रात्रौ हिमाहारो वेगल्पः पथि सिन्धुरः ll
छायालयो गजो नीलो निर्मलो नास्ति सत्कुले l रात्रौ दर्पणमभ्राङ्गं नागस्तुङ्गनखो बली ll
धीरो युवा कथालोलः पूज्यो नारीजरैर्भगः l कन्यागारे नागवल्ली देवो विश्वस्थली भृगुः ll
तत्परादिकलान्तास्तु महाज्या माधवोदिताः l स्वस्वपूर्वविशुद्धे तु शिष्टास्तत्खण्डमौर्विकाः ll' (२/६/५)

संख्या-रेखा की परिकल्पना (कान्सेप्ट)

'एकप्रभृत्यापरार्धसंख्यास्वरूपपरिज्ञानाय रेखाध्यारोपणं कृत्वा एकेयं रेखा दशेयं,
शतेयं, सहस्रेयं इति ग्राहयति, अवगमयति, संख्यास्वरूम, केवलं, न तु संख्यायाः रेखातत्त्वमेव l' – बृहदारण्यक आंकरभाष्य (४.४.२५)

जिसका अर्थ है–

1 unit, 10 units, 100 units, 1000 units etc. up to parardha can be located in a number line- Now by using the number line one can do operations like addition, subtraction and so on.

ये तो कुछ नमूने हैं, जो ये दर्शाने के लिये दिये गये हैं कि संस्कृत ग्रंथों में केवल पूजा पाठ या आरती के मंत्र नहीं हैं बल्कि तमाम विज्ञान भरा पड़ा है। दुर्भाग्य से कालान्तर में व विदेशी आक्रांताओं के चलते संस्कृत का ह्रास होने के कारण हमारे पूर्वजों के ज्ञान का भावी पीढ़ी द्वारा विस्तार नहीं हो पाया और बहुत से ग्रंथ आक्रांताओं द्वारा नष्ट भ्रष्ट कर दिए गए ।

– डॉ. एम.एल. गुप्ता
ए-१०४,चन्द्रेश हाइट्स, जैसल पार्क, भायंदर (पूर्व)
जिला-ठाणे, महाराष्ट्र-४०११०५

आवश्यक सूचना- नवलखा महल के जीर्णोद्धार, सौन्दर्यीकरण एवं उपयोगता विस्तार की योजना के अन्तर्गत प्राथमिक निर्माण कार्य आरम्भ हो गया है जिसके कारण इस वर्ष का सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव स्थगित किया गया है कृपया सभी आर्यजन सूचित हों।
– भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

सुबह-सुबह एक मित्र महोदय का फोन आ गया। उम्र में मुझसे काफी बड़े हैं। जीवन के ७३ वसन्त पूरे कर चुके हैं। पौत्र-पौत्रियों के बारे में बातें करने लगे। उनकी पढ़ाई लिखाई, प्राप्त अंक, कैरियर, खानपान, दिनचर्या, आदतों व उनके व्यवहार के बारे में काफी बातें कीं। बतलाया कि कई बार छुट्टियों में भी हमारे पास न आकर हॉस्टल में ही पड़े रहते हैं। बच्चों की और भी कई बातों से संतुष्ट नहीं थे। बात करते हुए बीच-बीच में उत्तेजित तक हो जाते थे। अपने बच्चों अथवा पौत्र-पौत्रियों को लेकर माता-पिता अथवा घर के बुजुर्गों की चिन्ता स्वाभाविक है लेकिन हर चीज की एक सीमा होती है। अपने बच्चों अथवा पौत्र-पौत्रियों के मामलों में कितनी चिन्ता की जाए अथवा उनके जीवन में कितना

बच्चों के जीवन में हस्तक्षेप की सीमारेखा अनिवार्य है

हस्तक्षेप किया जाए, यदि हम इस सीमारेखा को समझकर उसके अनुसार व्यवहार करेंगे तो उनसे हमारे सम्बन्ध सदैव आत्मीय व अर्थपूर्ण बने रहेंगे अन्यथा हमेशा के लिए तनावपूर्ण हो जाएँगे। कारण स्पष्ट है और वो ये है कि कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में दूसरों की बेजा दखलंदाजी पसंद नहीं करता।

जहाँ तक अपने पौत्र-पौत्रियों की पढ़ाई-लिखाई अथवा उनके भविष्य को लेकर घर के बुजुर्गों की चिन्ता का प्रश्न है वह स्वाभाविक है लेकिन उम्र के आखिरी पड़ाव पर पहुँचने के बाद इसकी मुख्य चिन्ता बच्चों के माता-पिता पर छोड़ देनी चाहिए और जहाँ बहुत जरूरी अथवा अपेक्षित हो वहीं अपनी राय व्यक्त करनी चाहिए। उनकी शिक्षा-दीक्षा और कैरियर के विषय में उनके माता-पिता अपेक्षाकृत अधिक उचित निर्णय ले सकते हैं। उनको माँगने पर सलाह दी जा सकती है लेकिन उनके निर्णयों को बदलने अथवा उनमें कमी निकालने का प्रयास किसी भी दृष्टि से उचित प्रतीत नहीं होता। वैसे भी आज कैरियर के क्षेत्र में बहुत परिवर्तन हो चुके हैं अतः समय के अनुसार कैरियर के सही चयन के विषय में वे स्वयं अधिक जानते हैं। आज के जमाने की तुलना अपने जमाने से करना तो किसी भी तरह से उचित नहीं ठहरता। समय के साथ हर चीज बदलती है इस बात को अच्छी तरह से जान लेना और स्वीकार कर लेना चाहिए।

समय के साथ-साथ नई पीढ़ियाँ भी बदल जाती हैं। उनकी सोच पुरानी पीढ़ियों की सोच जैसी नहीं हो सकती। होनी भी नहीं चाहिए। यदि नई पीढ़ी की सोच में समयानुसार अपेक्षित परिवर्तन नहीं होगा तो वो आगे बढ़ने की बजाय पिछड़ जाएगी। नई पीढ़ी की सोच ही नहीं उनका खानपान, पहनावा व आदतें सब बदल जाते हैं जो अत्यन्त स्वाभाविक है। उनकी दिनचर्या, खानपान व पहनावे को लेकर ज्यादा टोकाटोकी करना अथवा हर बात में हस्तक्षेप करना किसी भी तरह से उचित नहीं, विशेषरूप से उनके मित्रों अथवा अपने परिचितों या रिश्तेदारों की उपस्थिति में। उनके स्वास्थ्य के विषय में चिन्ता व्यक्त की जा सकती है लेकिन उनकी शारीरिक बनावट अथवा देहयष्टि के विषय में नकारात्मक टिप्पणी करके नहीं। यदि हम किसी बच्चे से कहें

कि ये क्या गैंडे जैसा शरीर बना रखा है तो निश्चित रूप से वो हमसे दूर-दूर रहने और हममें कमियाँ निकालने का प्रयास करेगा। हमारी बातों से किसी भी कीमत पर बच्चे के स्वाभिमान को ठेस नहीं पहुँचनी चाहिए।

जो बच्चे घर से बाहर रहकर पढ़ाई करते हैं वे छुट्टियों में अथवा बीच में जब कभी भी घर के सदस्यों से मिलने अथवा छुट्टियाँ बिताने के लिए घर आएँ तो उनकी हर बात में हस्तक्षेप करने या उन्हें हर बात पर प्रवचन देने से वे घर आनाजाना कम कर देते हैं, जो दोनों के लिए ही ठीक नहीं। माना कि हम अत्यन्त सात्त्विक भोजन करते हैं और हमारी दिनचर्या भी आदर्श और व्यवस्थित रहती है लेकिन बाहर पढ़ने वाले बच्चों के लिए यह संभव नहीं हो पाता। आजकल स्टूडेंट्स पर पढ़ाई का बड़ा प्रेशर रहता है। रात-रात भर जागकर पढ़ने वाले बच्चों के लिए ब्रह्ममुहूर्त्त में उठकर स्नान-ध्यान करना कैसे संभव है? हम अपने बच्चों को डॉक्टर अथवा इंजीनियर बनाना चाहते हैं लेकिन साथ ही ये भी चाहते हैं कि उनकी दिनचर्या गुरुकुलों में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों जैसी हो, जो आदर्श तो है पर प्राप्य नहीं है।

हमें परिस्थितियों के अनुसार होने वाले परिवर्तन को स्वीकार कर लेना चाहिए अन्यथा ये हमारे लिए ठीक नहीं होगा। बच्चों के कपड़ों को लेकर भी ज्यादा परेशान रहना ठीक नहीं। यदि हम बच्चों पर अपनी पसंद थोप देंगे तो इसकी संभावना अधिक है कि वे अपने पीयर ग्रुप में उपहास के पात्र बन जाएँ। इससे उनके व्यक्तित्व का विकास बुरी तरह से प्रभावित हो सकता है जो हर तरह से उनकी उन्नति में बाधक होगा। यदि बच्चे गलतियाँ करते हैं तो भी निराश होने की जरूरत नहीं क्योंकि गलतियों से भी वे सीखते हैं। यदि बच्चों की गलतियों से परेशान होकर उन्हें टोकते व कुछ नया करने से रोकते रहेंगे तो वे बहुत अधिक नया नहीं सीख पाएँगे।

प्रश्न उठता है कि बच्चों के मामले में बुजुर्गों की भूमिका क्या हो? वे किस सीमा तक उनके जीवन में हस्तक्षेप करें। बच्चों से यहाँ तात्पर्य किशोरों और युवाओं से है। बच्चे अथवा पौत्र-पौत्रियाँ चाहे वे स्कूल-कॉलेज में पढ़ रहे हों अथवा अन्य किसी प्रकार का प्रशिक्षण ले रहे हों या किसी व्यवसाय अथवा सेवा में जा रहे हों बुजुर्गों की महत्त्वपूर्ण भूमिका से इंकार नहीं किया जा सकता लेकिन उनकी भूमिका फिलर की तरह होनी चाहिए। पत्र-पत्रिकाओं में विभिन्न रचनाओं अथवा आलेखों के अन्त में कई बार कुछ जगह बच जाती है। संपादक उन स्थानों पर छोटी-छोटी रचनाएँ, प्रेरक प्रसंग, दोहे आदि डाल देते हैं। मजे की बात तो ये है कि कई बार ये संक्षिप्त प्रस्तुतियाँ मुख्य रचनाओं से भी महत्त्वपूर्ण और उपयोगी होती हैं। मुझे याद है कि मैं प्रारम्भ से ही जब भी किसी पत्रिका को पढ़ने के लिए खोलता था तो सबसे पहले इन फिलर्स को ही पढ़ता था। मैंने इन्हें हमेशा ही रोचक व ज्ञानवर्धक पाया। यदि हम बच्चों के जीवन में हस्तक्षेप के मामले में अपनी भूमिका फिलर्स की रखें और अच्छे फिलर्स की रखें तो बच्चे न केवल हमारी ओर ध्यान देंगे अपितु हमारी बातों से लाभान्वित भी होंगे।

हम उनके जीवन के उन हिस्सों को प्रभावित करें जिनका पाठ्यक्रमों में कोई स्थान नहीं अथवा जो अन्य किसी कारण से उपेक्षित रह जाते हैं। जब वे चलते हुए किसी दोराहे पर आकर भ्रमित होकर रुक जाएँ अथवा कोई गलती कर बैठें तब उनका मार्गदर्शन करें व उन्हें सही मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। बच्चों की पसन्द को महत्त्व दें और उनकी पसन्द में अपनी पसन्द जोड़ दें लेकिन आटे में नमक के समान। बच्चों की आलोचना करने की बजाय उनकी अच्छी आदतों को रेखांकित करके इनके लिए उनकी प्रशंसा करें। आज बच्चे ऐसा बहुत कुछ जानते हैं जो हम बिल्कुल नहीं जानते। उनकी नई-नई जानकारियों और ज्ञान को न केवल महत्त्व दें अपितु उनसे कुछ नया सीखने का प्रयास करें। इससे उन्हें अच्छा लगेगा और वे हमारे और अधिक निकट आने लगेंगे। इससे हमारे आपसी सम्बन्धों में तनाव की अपेक्षा प्रगाढ़ता उत्पन्न होगी।

- सीताराम गुप्ता,
ए डी-१०६-सी, पीतम पुरा,
दिल्ली- ११००३४

पौरुषेय शक्ति उमगतीं देश की दिव्य नारियाँ

जिन दिनों यह पंक्तियां उभर कर अंकित हो रही हैं उन दिनों अपने भारत देश में देवी के नवरूपों को लक्ष्य कर नवरात्रि जागरण पर्व मनाया जा रहा है, जो नवसंवत्सर के प्रथम दिवस से प्रारम्भ होकर श्री राम के जन्म दिवस रामनवमी पर पूर्ण होता है। कतिपय पुरुष व अतिशय नारियां व्रत उपवास करके देश में संस्कारित सौरभ का प्रवाह कर देते हैं। विभिन्न नामरूपधारी इन पौराणिक देवियों में एक अद्‌भुत समानता पायी जाती है। वह इनके वाहन एवं हाथ में अस्त्र-शस्त्र के रूप में देखी जा सकती है। इनके वाहन इनके स्वरूप के अनुरूप शक्तिशाली होते हैं। और अस्त्र-शस्त्र राक्षसी शत्रुओं के संहारक होते हैं। इनका वर्णन करके पंक्तियों को भारी भरकम न करते हुए 'प्रथमा विश्ववारा भारतीय संस्कृति' की उस झांकी की ओर झांकते हैं, जिसके सोलह संस्कार श्रेणी के द्वितीय 'पुंसवन संस्कार' द्वारा गर्भस्थ शिशु में नर-नारी के भेद को ध्यान में न रखते हुए पुरुषत्व को प्रतिरोपित किया जाता है। माता को ऐसे ही चित्र एवं कथा गान श्रवण की सीख दी जाती है।

'पुर' अभिगमने, अग्रसर होने, मुख्य होने के लिए अपने क्षेत्र में बसने वाले व्यक्ति को, चाहे वह नर या नारी हो,शक्ति सम्पन्न और शत्रुहन्ता होना चाहिए। ऐसा ही भारत के इतिहास में होता देखा गया है और आज के भोगवाद में भी यह संयोग निर्विवाद होता देखा जा सकता है। हर धर्मपत्नी में यही वीरभाव हो, जो ऋषिका शची पौलोमी व्यक्त करती हैं-

मम पुत्राः शत्रुहणोऽथो मे दुहिता विराट्।
उताहमस्मि संजया पत्यौ मे श्लोक उत्तमः॥ - ऋ.१०/१५९/३

मेरे पुत्र शत्रुओं का हनन करने वाले हैं,मेरी पुत्री भी महानतम् विराट दीप्तिमती है, मैं सम्यक् रूप में विजयशालिनी हूँ क्योंकि मेरे पति का यश उत्तम, लोक विश्रुत है।

वैदिक शची के इसी प्रण को दोहराते हुए पौराणिक शची इसी भावना को भव्य बनाते हुए देवताओं के नायक निज पति इन्द्र को, हाथ में रक्षाबन्धन और माथे पर तिलक वन्दन करके राक्षसों से युद्ध कर विजय अभियान हेतु प्रेरित करती है। चैत्र के शुक्ल पक्ष में देवी जागरण और ठीक छः महीने बाद फिर से देवी दुर्गा जागरण के उत्सव मनाये जाते हैं। जैसे देवी दुर्गा की शक्ति सामर्थ्य हमारे दुर्गति दुर्बलता के दोष समाप्त करती है वैसे ही देशकी नारियां भी प्रत्यक्ष में ऐसा ही करती हैं। क्रान्तिवीर बलिदानी सरदार भगतसिंह के साथ स्वर्गीय भगवती प्रसाद व उनकी धर्मपत्नी जिनको सभी साथी दुर्गाभाभी कहते थे। उन्होंने भगतसिंह की क्रान्ति योजना की सफलता के लिए मिस्टर एवं मिसेज के अभिनय से एक बार उन्हें बचा लिया था। पंडित रामप्रसाद बिस्मिल की बहिन शास्त्रीदेवी धन्य हैं जिन्होंने अपने पैरों में बन्दूकें बाँधकर जख्मी होते रहने के बाद भी क्रान्तिकारियों तक पहुँचायी।

श्रीमती ललिता शास्त्री कम वीरांगना नहीं थीं; जिन्होंने आर्थिक तंगी रहते स्वतंत्रता सैनानी अपने पति लालबहादुर शास्त्री के उत्साह को बनाये रखा जिसके बल पर ही प्रधानमंत्री शास्त्री ने भारत को प्रति सोमवार उपवास कराके

न केवल भोजन की पूर्ति की अपितु सैनिक सहायता बढ़ाकर भारत को विजयी बनाया और स्वयं बलिदान हो गए। इस शृंखला में शास्त्री जी के बाद पदासीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने भयावह संकटों के मध्य उसी शत्रु स्वभावी देश को न केवल पराजित ही किया, उसके तिरानवे हजार सैनिकों को आत्मसमर्पण कराते हुए एक नवीन बांग्लादेश नाम के देश का उदय कर दिया। इस उपलब्धि के लिए खचाखच भरी हुई संसद में विरोधी दल के नेता अटलबिहारी वाजपेयी ने श्रीमती इन्दिरा गांधी को साक्षात् महान् दुर्गा कहकर सराहना की थी।

महारानी लक्ष्मीबाई, महारानी अवन्ती बाई, महारानी अहिल्या बाई, आदि आमने सामने के युद्ध में बलिदान हो गईं किन्तु 'खूब लड़ी मरदानी काव्यालंकार' की अधिकारिणी बन गईं। छत्रपति शिवाजी की माता वीरवती जीजाबाई ने बचपन से ही पुत्र को इस रूप में संस्कारित किया था कि वह मुगल शासकों को धूल चटा सके। वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप का बादशाह अकबर से स्वातन्त्र्य युद्ध चरम पर पहुँच गया था, इसके लिए उन्होंने महलों को छोड़कर वन पर्वत में अपना बसेरा बना लिया था। जिस दिन बच्चों के लिए बनायी गई घासपात की रोटी भी जंगली बिलाव चुराकर ले जाने लगा, उस दिन उनका दिल दहल गया। वे अकबर को संधिपत्र लिखने को उद्यत हो गए तब उनकी धर्मपत्नी ही थीं जिन्होंने उनके कर की कलम को छीनकर उनकी कीर्ति पताका को झुकने नहीं दिया था। राजपूताना की अनगिनत वीरांगनाओं ने जौहर की ज्वाला में जलकर भी अपने पति व कुल को कलंकित होने से बचाये रखा था और इतिहास में तारों की भांति ज्योतिर्मय बन गईं। कतिपय ऐसे भी कुलहीन थे, जो अपनी सुख सुविधा के लिए आत्मसमर्पण करके अन्धकार में समा गये, उन्हें यहां प्रकाश में लाना उचित नहीं है। पर एक छोटे से राज्य की राजकुमारी का उदाहरण वेदमंत्र को सम्पुष्ट करता प्रतीत होता है।

लघु राज्य रूपनगर की राजकुमारी चंचल कुमारी के अनिन्द्य सौन्दर्य का पता जब बादशाह औरंगजेब को चला तो उसने कुमारी के पिता राज्य के शासक राजा को संदेश भेजा-'अपनी पुत्री को हमारी बेगमों की सेवा के लिए दिल्ली पहुँचा दीजिये, अन्यथा मैं आक्रमण करके राज्य को धूल में मिला दूंगा।' राजा इस आदेश से घबड़ाकर बेटी को दिल्ली जाने के लिए उकसाने लगे तब चंचलकुमारी ने अपने व राज्य के रक्षण का एक ही उपाय सोचा स्वयंवर। स्थिति का उल्लेख करते हुए उसने महाराणा राजसिंह को अपना पत्र राजपुरोहित के द्वारा पहुँचाया। उसने लिखा था- आपकी वीरता व धर्म परायणता को देखकर मैंने हृदय से आपको पति रूप में वरण कर लिया है। अब मेरी रक्षा का दायित्व आपके ऊपर है। आप रूपनगर आकर पाणिग्रहण कर मुझे मेवाड़ ले जायें, अन्यथा मैं बादशाह के चंगुल से बच न सकूँगी। यदि ऐसा हुआ तो रूपनगर के राजा की बेटी नहीं, महाराणा राजसिंह की पत्नी दिल्ली जायेगी। भरे दरबार में यह पत्र पढ़कर राणा कुछ सोच में पड़ गए और अपने राजपुरोहित को पत्र दरबार को सुनाने के लिए दे दिया। पत्र पढ़कर सुनाने के बाद राजपुरोहित ने अपनी कड़ी आँखों से देखते हुए आवेशपूर्ण मुद्रा में कहा- 'इसमें संकोच की क्या बात है? क्या अपनी पत्नी की रक्षा का साहस भी महाराणा में नहीं है?'

महाराणा ने कहा-'रक्षा तो अवश्य होगी बात केवल सीमित समय में कार्य पूरा करने की है। राणा ने घोषणा की। तलवार व पान का बीड़ा दरबार में रखा गया। सन्नाटा छाते देखकर नव युवा सरदार वीर चूण्डावत की ओर राणा ने अपेक्षापूर्ण नेत्रों से देखा, और चूण्डावत ने चुनौती को स्वीकार कर लिया। दरबार जयकारों व तलवार की झंकारों से गूंज उठा। वे अपनी सेना को कूच का आदेश देकर विदाई के लिए अपने महल गए। उनकी नवयुवती पत्नी के विवाहके समय लगायी हल्दी का पीलापन हाथ में अभी फीका नहीं पड़ा था, सरदार के हाथ का कंगन भी नहीं खुलने पाया था। नवयुवा हाड़ी रानी इस प्रस्थान को सुनकर कृतकृत्य होकर बोली - वीरों की भूमि मेवाड़ में अपने पति की धाक सुनकर मैं अभिभूत हूँ पर आप मुझे देखकर पहले प्रसन्न फिर अवसन्न क्यों हो गए?

आप मेरी चिन्ता छोड़कर निश्चिन्त हो जाइये मैं आपके नाम पर बट्टा न लगने दूँगी। सरदार तो चले गए, किन्तु एक सैनिक को भेजकर युवा रानी से कोई चिह्न देने को कहा। रानी ने सोचा- मेरी चिन्ता से सरदार अपने कर्तव्य का

पालन ठीक से कर न सकेंगे। उन्हें निश्चिन्त करना चाहिए। वे अन्दर से एक थाल व रुमाल लेकर आईं बोलीं चिह्न के रूप में मैं अपना शीश पति को भेंट करती हूं।' युद्धभूमि में सरदार इस भेंट को देखकर चकित तो हुए किन्तु उसे अपनी गर्दन में मुण्डमाला बनाकर ऐसा युद्ध किया कि औरंगजेब को भी उससे अपने प्राणों की भीख माँगनी पड़ी।

यद्यपि शत्रु सैनिक के सामूहिक आक्रमण से चूण्डावत बलिदान तो हो गए किन्तु उन्होंने शत्रुदल का अत्यधिक संहार किया और महाराणा राजसिंह को अपनी प्रतिज्ञा का पालन कर राजकुमारी चंचल कुमारी की शील सुरक्षा का अवसर प्रदान कर दिया। यद्यपि इस रण संग्राम के उदाहरण ने लेख का प्रभूत भाग घेर लिया किन्तु भारतीय इतिहास के स्वर्ण कण अवश्य बिखरा गया।

भारत भूमि पर यदि चन्द जयचन्द अपनी स्वार्थ ध्वनि को मन्द रखें तो निस्वार्थ वीर बलिदानी हुंकार का गुंजार असंभव नहीं है। वैदिक काल की ऋषिकाओं की भाँति वर्तमान मातृशक्ति उद्घोष करती है।

अहं केतुरहं मूर्धाहमुग्रा विवाचनी।
ममेदनु क्रतुं पतिः सेहानाया उपाचरेत्।। - ऋ. १०/१५९/२

मैं ध्वजवत सुदूर दर्शक हूँ, मैं सचेतक उग्र भाषा उच्चारिणी हूँ, मैं सहनशील होकर कर्तव्य कारिणी हूँ, मेरे पति को भी मेरा अनुकरण करना चाहिए। भारतवर्ष की विदेश मंत्री सुषमा स्वराज (तत्कालीन), राष्ट्रसंघ यहाँ तक कि मुस्लिम देशों की महासभा में इसी ध्येय से आमंत्रित होती हैं, सर्वोच्च सम्मान की अधिकारिणी बनती हैं। भारत की राष्ट्र-रक्षामंत्री

(तत्कालीन) निर्मला सीतारमण सैनिक गणवेश में मोर्चे पर जाकर उत्साहवर्द्धन करती हैं। महिलाओं की सुसज्जित रणवाहिनी गणतंत्र पर्व परेड में मातृभूमि का अभिवादन करती है। आज की नारियाँ आत्मघाती हमले में आतंकियों द्वारा शहीद अपने पति या पुत्र के सपने को साकार करने में अग्रसर हैं। शहीद पति कृष्णसिंह का सपना, पत्नी राजवाला ने एक बेटा सेना, दूसरा भू सेना में भेजकर परिपूर्ण किया। बिजौली (भागरा) के मुल्तानसिंह असम उग्रवादियों द्वारा शहीद हुए। तत्कालीन शासकों ने वादा करके भी गाँव में उनका स्मारक नहीं बनवाया तो उनकी पत्नी सुमन देवी ने ही यह कार्य कर दिखाया। कश्मीर के पुलवामा में आत्मघाती हमला करके बड़ी संख्या में मातृभूमि के वीर शहीद किए गए। भारतीय वायुसेना ने आतंकी प्रशिक्षण केन्द्र को रातोंरात नष्ट करके शत्रु को सबक सिखा दिया। कश्मीर के सोपिया के १६ वर्षीय किशोर इरफान रमजान शेख ने कई आतंकियों को मार गिराया। भारत के महामहिम राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने उसको शौर्य चक्र से सम्मानित किया।

वेदमंत्रों की भाव व्यंजना यही है कि हर पत्नी अपने पुत्र या पति को वीर पुरुष देखना चाहती है, उसे इनका स्त्रैण कायर कुरूप कदापि स्वीकार नहीं है, पुंसवन संस्कार के द्वारा इसी पौरुष को प्रोत्साहित किया गया है। हमारे निकटवर्ती नगर अतरौली की नवविवाहित पत्नी ने अपने पति को जब शादियों की सचल रंगशालाओं में स्त्री नर्तकी वेश में चटक मटक कर घूंघट में नाज नखरे दिखाते देखा तो, बहुत दुःखी हुई। उसे ऐसा करने को बहुत मना किया। नहीं मानने पर उसने मरना स्वीकार किया, किन्तु पति के स्त्रीरूप को धिक्कार दिया।

कीर्ति पताका फहरायें दिगदिगन्त।
वीरों का ऐसा हो वसन्त।।

- देवनारायण भारद्वाज
वरेण्यम्, एमआईजी ४५ पी अवन्तिका प्रथम
रामघाट, अलीगढ़ २०२००१ (उत्तरप्रदेश)

समाचार

ब्रह्मचारिणी सुन्नृता आर्या का सम्मान

उदयपुर। २३ जून। आज आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर के रविवारीय सत्संग में नजीमाबाद, हरिद्वार कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणी सुन्नृता आर्या ने प्रवचन में ईश्वर से जुड़ने हेतु हवन, भजन, ध्यान व श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा दी। आर्य समाज उदयपुर के मंत्री यशवंत श्रीमाली ने स्वागत किया। श्रीमती सरला गुप्ता ने प्रभु भक्ति का भजन प्रस्तुत किया। आर्य समाज, हिरण मगरी के प्रधान श्री भंवर लाल आर्य ने महर्षि दयानन्द सरस्वती का स्मृति चिह्न आर्या को भेंट किया। कोषाध्यक्ष श्री रमेश चन्द्र जायसवाल ने आभार व्यक्त किया। संचालन भूपेन्द्र शर्मा ने किया। श्री इन्द्र प्रकाश यादव ने गुरुकुल शिक्षा से संस्कारवान नई पीढ़ी के निर्माण का आह्वान किया।

- भूपेन्द्र शर्मा, मंत्री, आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर

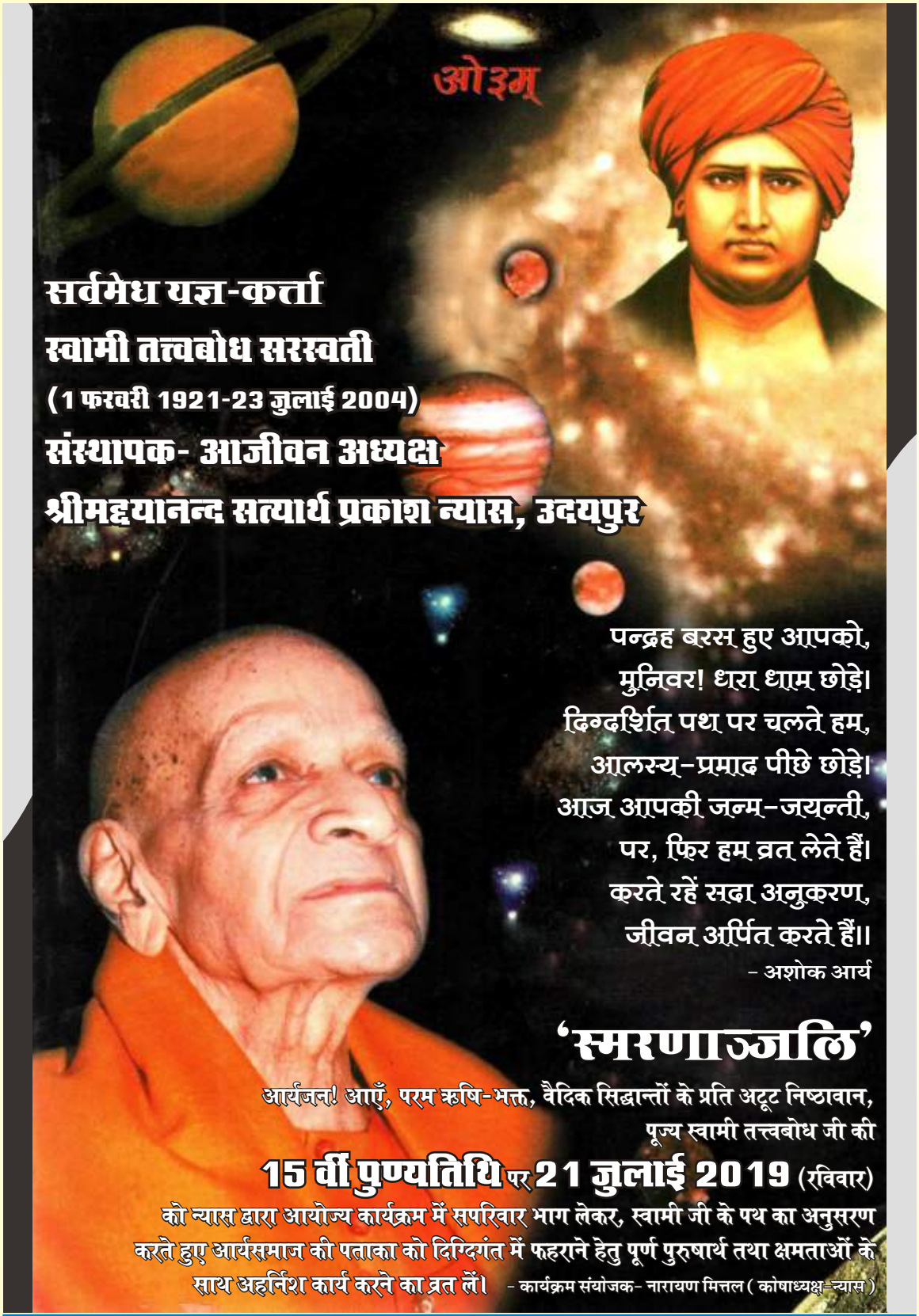
ओ३म्
सर्वमेध यज्ञ-कर्त्ता
स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती
(1 फरवरी 1921-23 जुलाई 2004)
संस्थापक- आजीवन अध्यक्ष
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर
पन्द्रह बरस हुए आपको,
मुनिवर! धरा धाम छोड़े।
दिग्दर्शित पथ पर चलते हम,
आलस्य-प्रमाद पीछे छोड़े।
आज आपकी जन्म-जयन्ती,
पर, फिर हम व्रत लेते हैं।
करते रहें सदा अनुकरण,
जीवन अर्पित करते हैं।।
- अशोक आर्य
'स्मरणाञ्जलि'
आर्यजन! आएँ, परम ऋषि-भक्त, वैदिक सिद्धान्तों के प्रति अटूट निष्ठावान,
पूज्य स्वामी तत्त्वबोध जी की
15 वीं पुण्यतिथि पर 21 जुलाई 2019 (रविवार)
को न्यास द्वारा आयोज्य कार्यक्रम में सपरिवार भाग लेकर, स्वामी जी के पथ का अनुसरण
करते हुए आर्यसमाज की पताका को दिग्दिगंत में फहराने हेतु पूर्ण पुरुषार्थ तथा क्षमताओं के
साथ अहर्निश कार्य करने का व्रत लें। - कार्यक्रम संयोजक- नारायण मित्तल (कोषाध्यक्ष-न्यास)

{आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय से कौन परिचित नहीं है ?आचार्य जी के व्याख्यानों में लगभग सदैव ही दुरूह वैदिक सिद्धांतों पर गहन, शास्त्र सम्मत चिंतन उद्घाटित होता है। ऋषि-मान्यताओं की पुष्टि में उनकी ललक अनुकरणीय है। आचार्य जी के अनेक प्रशंसकों का उनसे आग्रह रहता है कि वे इस विद्या को लेखबद्ध कर सुरक्षित करदें। ऐसे ही एक आग्रह पर एक लघु पुस्तिका 'परमाणु-विज्ञान' का प्रणयन आचार्य जी की लेखनी से हुआ है। सत्यार्थ सौरभ के पाठकों के लाभार्थ हम यथाशक्य इसे क्रमशः प्रकाशित करने का यत्न करेंगे। - अशोक आर्य}

प्रश्नः- परमाणु किसको कहते हैं?

उत्तरः- जो द्रव्य विभक्त होता हुआ फिर जिसका विभाग नहीं होता है, वह परमाणु कहा जाता है।

प्रश्नः- परमाणु बनते कैसे हैं?

उत्तर- जो पदार्थ संयोग से विकार को प्राप्त होते हैं, वे अग्नि के निमित्त से अति सूक्ष्म होकर परमाणुरूप होते हैं।

प्रश्नः- अग्नि के निमित्त से परमाणु रूप कैसे होते हैं?

उत्तरः- परमेश्वर ने अग्नि और सूर्य को इसलिए ही रचा है कि वे सब पदार्थों के भीतर प्रवेश कर उनके रस और जल को छिन्न-भिन्न कर दें, जिससे वे वायुमण्डल में जाकर वहाँ से पृथिवी पर आकर सबको सुख और शुद्धि करने वाले हों।

प्रश्नः- अग्नि रसों को छिन्न-भिन्न परम सूक्ष्म क्यों करता है?

उत्तरः- अग्नि का दाहक स्वभाव अर्थात् जलाना है। वेद विज्ञान की भाषा में अग्नि की तकनीकी संज्ञाएँ हैं जिन्हें 'आमात्' और 'निष्क्रव्याद्' कहते हैं। 'आमात् अर्थात् 'आमानपक्वानत्ति तस्मात् 'आमात्' अर्थात् कच्चे पदार्थों को जलाने वाला या खाने वा ग्रहण करने वाला। इसके साथ ही ' निष्क्रव्याद् ' अर्थात् क्रव्यं पक्वमांसमत्ति तस्मान्निर्गतः अर्थात् पक्व अर्थात् भस्म आदि को जो जलाने में समर्थ नहीं है। कच्चा अर्थात् गीला-रसयुक्त पदार्थ है उसको जलाने में समर्थ है तथा जले हुए जिसमें रस नहीं रहा है, उस भस्म को जलाने में जो असमर्थ है, वही अग्नि है। इसी से अग्नि उन रसों वा जलों को छिन्न-भिन्न कर परम सूक्ष्म बनाकर परमाणु रूप कर देता है।

प्रश्न- क्या इसी भावना के अन्तर्गत इस अग्नि के अन्य भी कार्य और नामान्तर हैं?

उत्तर- हाँ! जिससे मनुष्य कच्चे-कच्चे पदार्थ पकाकर खाते हैं, वह 'आमात्', जिस करके सब प्राणियों का खाया हुआ अन्न आदि द्रव्य पकता है, वह 'जाठर' और जिस करके मनुष्य लोग मरे हुए को जलाते हैं, वह 'क्रव्याद्' अग्नि और जिस करके दिव्य गुणों को प्राप्त कराने वाली होती है वह 'विद्युत्', जिस करके पृथिवी का धारण और आकर्षण होता है, वह 'सूर्य' कहाता है।

प्रश्नः- परमाणु के होने में अग्नि की प्रक्रिया क्या है?

उत्तरः- विशेष ध्यान देने की बात यह है कि एक ही अग्नि नाम के मूल कारण से तीन दीप्तियाँ होती हैं, जिनका वर्णन आगे अग्नि तत्त्व विषयक चर्चा में करेंगे, उन दीप्तियों के नाम अग्नि, सूर्य और विद्युत् हैं। अग्नि पृथिवी स्थानीय, सूर्य द्युस्थानीय और विद्युत् अन्तरिक्ष स्थानीय है। सर्वप्रथम अग्नि पृथिवीस्थ रस या जल को पृथिवी से विभक्त करता है, उसको सूर्य अपनी किरणों से छिन्न-भिन्न कर सूक्ष्म बना

वायु के द्वारा ऊपर को आकर्षित अर्थात् खींचता है फिर परम सूक्ष्म परमाणु वायु और विद्युत् के साथ अन्तरिक्ष में रहते हैं।

प्रश्नः- क्या अग्नि पृथिवीस्थानीय है? कोई संकेत वेद में प्रमाणस्वरूप है?

उत्तर- वेद ही सर्वज्ञानमय है। यजु. अध्याय १/मंत्र ११ कहता है कि

'पृथिव्यास्त्वा नाभौ सादयाम्यदित्याऽउपस्थेऽग्ने हव्यं रक्ष।'

ईश्वर उपदेश करता है कि मैं शिल्पविद्या का जानने वाला यज्ञ को करता हुआ प्राणियों के सुख और दारिद्र्य आदि दोषों के विनाश वा सुख से दान आदि धर्म करने की इच्छा से इस पृथिवी पर अर्थात् पृथिवी की नाभि में अग्नि की स्थापना करता हूँ। यही अग्नि आदित्याः- अन्तरिक्ष के उपस्थे- भीतर स्थित मेघमण्डल में जो हुतद्रव्य हैं, उनकी रक्षा करने वाला है, इसलिए- इस प्रयोजन के लिए इस अग्नि को पृथिवी में स्थापन करता हूँ।

प्रश्न- क्या ये परमाणु शुद्धि भाव को भी प्राप्त होते हैं?

उत्तर- जब यह अग्नि वृक्षौषधि वनस्पति जलादि पदार्थों में प्रवेश करके उन संहत अर्थात् पदार्थों में मिले हुए जलों को विभेद कर रस को पृथक् करता है फिर वे धूमवाष्प के रूप में हल्के होकर वायु और सूर्य किरणों से ऊपर आकाश में चढ़ते हैं- उनमें जितना अंश जल का है, वह भाप कहाता है, और जो शुष्क है, वह पृथिव्यांश है, इन दोनों के योग का नाम धूम है। फिर धूमवाष्प के आकाश में गमनानन्तर जल संचय होता है, उससे घन यानि बादल होते हैं फिर वे परमाणु मेघमण्डल में वायु के आधार से रहते हैं, उन वायु दलों से परस्पर मिलकर वृष्टि, वृष्टि से औषधि, औषधियों से अन्न, अन्न से धातु, धातुओं से शरीर और शरीर से कर्म बनता है। अग्नि और सूर्य से विभक्त रस परमाणु होते समय कुछ शुद्ध भी हो जाते हैं।

प्रश्न- आनुषंगिक रूप में शुद्ध परमाणुओं से शरीर आदि सभी शुद्ध निर्मित होने चाहिए, परन्तु ऐसा नहीं है, यह बताइये?

उत्तर- परमाणुओं की शुद्धि में मात्र एक ही प्रयत्न नहीं है। क्योंकि प्रयत्न दो प्रकार का है- एक तो ईश्वर का किया हुआ और दूसरा जीव का। उनमें से ईश्वर का किया हुआ यह है कि उसने अग्निरूप सूर्य और सुगन्धरूप पुष्पादि को उत्पन्न किया है। वह सूर्य अच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः- निरन्तर पवित्र रश्मियों से संसार के पदार्थों के रसों को ऊपर खींचता है और पुष्पादि का सुगन्ध भी उसमें मिलता है और दुर्गन्ध का निवारण भी होता है। परन्तु जीव के प्रयत्न शैथिल्य व दुर्गन्ध करने से वे परमाणु सुगन्ध और दुर्गन्ध युक्त होने से जलवायु को भी मध्यम कर देते हैं। उस जल की वृष्टि से औषधि, अन्न, वीर्य और शरीरादि भी मध्यम हो जाते हैं और फिर उनके योग से बुद्धि, बल, पराक्रम, धैर्यादि गुण भी निकृष्ट हो जाते हैं क्योंकि जैसा कारण अर्थात् परमाणु होते हैं, वैसा हीबुद्धि बल आदि शरीरादि कार्य होता है। **क्रमशः.....**

- २४३, अरावली अपार्टमेन्ट
प्रथम तल, अलकनन्दा
नई दिल्ली- ११००१९

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के
मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक
नजदीक, तत्कालीन शैली का
संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित
सत्यार्थप्रकाश
अवश्य खरीदें।
घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१
अब मात्र कीमत ₹ 45 में
४००० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

विश्व भर से सहस्रों की संख्या में आने वाले दर्शकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

I am Ketul Kachhia. I visited this place and I am very surprised to hear many new things which we never heard or seen or read in any book, prior to this.
Thank you so much and good wishes

यहाँ आकर मुझे बहुत अच्छा लगा। उपलब्ध गाइड के द्वारा बहुत विस्तार से सारी जानकारियाँ उपलब्ध करायीं गयीं, जिससे मेरे ज्ञान में अपार वृद्धि हुयी एवं बहुत से अंधविश्वास समाप्त हो गए। मैं भविष्य में यहाँ पुनः आना चाहूँगा। - अनुज कुमार

मैं दीपाराम जोधपुर से आया हूँ और यहाँ से जो ज्ञान प्राप्त हुआ वो वास्तविक सा लगा और बहुत ही अच्छा महसूस हुआ।
- दीपा राम, जोधपुर

नवलखा महल में सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर द्वारा स्थापित आर्ट गैलेरी का अवलोकन किया। यज्ञशाला में यज्ञ किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती व आर्य समाज के सन्यासियों तथा आर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित हूँ। महान् पुरुषों की चित्रावली अत्यन्त मनमोहक लगी बड़ी प्रभावकारी है। आने वाली पीढियों के लिए प्रेरणास्रोत का कार्य करेगी। - महाशय जगमाल सिंह आर्य, गुरुकुल पूंठ

लेख का शीर्षक पढ़कर शायद आप चौंक गये होंगे क्योंकि जब किसी की मृत्यु हो जाती है तो हम कहते हैं कि अमुक व्यक्ति का स्वर्गवास हो गया। लगभग सभी धर्म स्वर्ग, नर्क, जन्नत, दोजख Heaven एवं Hell की बात करते हैं। इनमें से कोई भी धर्म जीवित मनुष्य को स्वर्ग प्राप्ति की बात नहीं करता।

जब किसी व्यक्ति को जीवन मृत्यु के आवागमन के चक्र से मुक्ति मिल जाती है तो हम उसकी मोक्ष प्राप्ति की बात करते हैं। स्वर्ग एक ऐसी स्थिति है जहाँ आदमी सुख, शांति, चैन, संतोष प्राप्ति के साथ रहता है। उसे कोई चिन्ता, फिक्र, बीमारी, शोक, संताप, खुशी, गम, भूख, प्यास का भय नहीं सताता। माना जाता है कि ऐसी स्थिति केवल मृत्यु के बाद ही प्राप्त होती है।

ऐसे में अगर हम जीवित व्यक्ति के स्वर्ग प्राप्ति की बात करें तो आश्चर्य तो होगा ना। हाँ, साहब यह सच है कि धरती पर ही स्वर्ग है, इसी धरती पर ही नर्क है। फर्क है तो केवल महसूस करने का। अच्छे तथा पुण्य कर्म करके मनुष्य को संतोष तथा शांति मिल सकती है। जिस आदमी ने काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार पर काबू पा लिया उसकी सारी इच्छाएँ मर जाती हैं, मन से अपने तथा पराये की भावना समाप्त हो जाती है, आदमी, राग, द्वेष से ऊपर उठ जाता है। आदमी दुनियादारी के मायाजाल में नहीं फंसता। उसे हर चीज में परमात्मा का रूप दिखाई देता रहता है, उसे परम सुख की प्राप्ति महसूस होती है। स्वर्ग तथा नर्क सिर्फ अनुभूति या एहसास की भावना का नाम है। कृष्ण जी को विदुर के साग तथा सुदामा की रूखी सूखी रोटी में जो आनन्द आया वह हमें धरती पर स्वर्ग की ही याद कराता है। क्या अपनी ही नाव में श्री रामचन्द्र जी, सीता तथा लक्ष्मण को गंगा पार कराने वाले खेवट को स्वर्ग सा परम सुख प्राप्त नहीं हुआ था, क्या श्रीराम को झूठे बेर खिलाने वाली शबरी को तब किसी स्वर्ग की जरूरत थी?

स्वर्ग यहाँ, नर्क यहाँ, इसी जीवन में ही सब कुछ है। मैं समझता हूँ जो लोग ऊपर आकाश की तरफ इशारा करके स्वर्ग होने की बात कहते हैं, वे आधारहीन भ्रम के जाल में फंसे हुए हैं। हम सभी को अपने अपने कार्यों का फल भोग कर ही जाना पड़ता है। जैसी करनी वैसी भरनी। बोओगे पेड़ बबूल का तो आम कहाँ से खाओगे। अच्छे कर्म किए हैं तो फल भी अच्छा मिलेगा जो कि स्वर्ग में मिलने वाली सुख सुविधाएँ, शांति, सकून, तृप्ति, बेफिक्री, भयमुक्त, रोगमुक्त होगा। कहा भी जाता है As you sow, so shall you reap अगर हम रात दिन काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार के चक्रव्यूह में फंसे रहेंगे, निन्दा, चुगली, बेईमानी, ईर्ष्या, बलात्कार, गैंगरेप, हत्या, हिंसा ही हमारे दिलो दिमाग में छाये रहेंगे, याद रखो इस सारे का फल घोर नर्क के तौर पर हमें यहीं भुगतना होगा। औलाद बिगड़ जायेगी घर में कलह-क्लेश, मारधाड़, अशांति, अविश्वास, असहयोग, बीमारी देखने को मिलेगी। अगर हम बेईमानी, चोरी, भ्रष्टाचार, अनाचार-दुराचार का पैसा कमा के अपने परिवारजनों को खिलायेंगे, समझ लीजिए हमने नर्क के लिए अभी से ही अपनी सीट पक्की करा ली है। आजकल, जो

हमारे देश की स्थिति है, राजनीतिक हालात हैं, मित्र, रिश्तेदार, पड़ोसी एक दूसरे के साथ जो विश्वासघात करते हैं, तरह-तरह की असाध्य बीमारियों के कारण ढ़ेर सारा पैसा खर्च करके भी आदमी ठीक नहीं होता मर जाता है यह सब नर्क नहीं तो क्या है? कहा भी जाता है कि If the result of good is not good, how the result of bad can good? आज सारी दुनिया में भय, भूख, अविश्वास, मृत्यु, भूचाल बाढ़, सूखा, सुनामी के कारण लोग थर-थर काँप रहे हैं। इतने परमाणु अस्त्र-शस्त्र बन गए हैं कि अगर आतंकवादियों के हाथ में ये बम आ जायें या फिर कोई सिरफिरा परमाणु अस्त्रों से सम्पन्न पागल शासक चाहे तो एक मिनिट में ही दुनिया को तबाह करके रख सकता है। क्या यह सब नर्क से बदतर नहीं।

बेशक कई बार कुछ शैतान मानसिकता वाले लोग दूसरों के लिए काँटे बोते हैं, खड्डे खोदते हैं या फिर नुकसान करके जीवन दुःखदायी बनाते हैं। जिसका कि वह बाद में स्वयं फल

भोगते हैं, लेकिन यह कटु सत्य है कि हमारे सुख-दुःख के लिए ९० प्रतिशत तक हमारे अपने कर्म ही जिम्मेदार हैं। अगर किसी व्यक्ति को बुरे कर्म करके भी कोई तकलीफ नहीं होती तो समझना चाहिए कि वह अभी तक अपने पहले के अच्छे कर्मों की वजह से बचा हुआ है। जैसे उसके शुभकर्मों का प्रताप खत्म हो जायेगा, उसके बुरे कर्म उसे घेरना शुरू कर देंगे। ऊपर वाला सब कुछ देखता है और हमारे सभी कर्मों का रिकार्ड रख रहा है। हम मानें या ना मानें हमें अपने कर्मों का फल यहाँ ही भोगना पड़ता है। अगर परमात्मा का भजन किया है, माँ-बाप, बुजुर्गों, दीन-दुखियों की सेवा की है, परहित में अपने को लगाया है, झूठ, निन्दा, ईर्ष्या, काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार से अपने आपको परे रखा है तो हमें अच्छे फल की आशा करनी चाहिए। सुख, शांति, सुकून, प्रशंसा, अच्छा स्वास्थ्य मिलेगा। हमें स्वर्ग की प्राप्ति होगी। अच्छे कर्म करने के फलस्वरूप ही कोई व्यक्ति बिना किसी भेदभाव के स्वर्ग जा सकता है। फिर हम स्वर्ग क्यों न चलें? अच्छे कर्म के बदले में मिला आशीर्वाद स्वर्ग जाने की सीढ़ी है।

- शामलाल कौशल
मकान नं. ९७५-बी/२०,राजीव निवास
शक्ति नगर, ग्रीन रोड, रोहतक- १२४००१
चलभाष- ०९४१६३५९०४५

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश

अब ४००० रु. सैकड़ा

सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग अब एक हजार प्रतियों के लिए

१५००० रु.

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली

कैसे करें रूफ-टाप रेन वाटर हार्वेस्टिंग

जल संरक्षण – कल संरक्षण

ये दो तरह से की जा सकती है

१. प्राकृतिक रिचार्ज

जब आजकल खुली भूमि पर १५ लीटर की एक बाल्टी डाली जाती है तो भूजल स्तर तक केवल १५ मिली लीटर पानी ही पहुँच पाता है,क्योंकि बीच की सारी मिट्टी उसे सोख लेती है। सामान्यतया ये प्राकृतिक रिचार्ज ५ से १० प्रतिशत ही हो पाता है।

२. कृत्रिम रिचार्ज

कृत्रिम रिचार्ज क्यों ?

क्योकि घर के अंदर और बाहर खुली जमीन नहीं बची।

क्योकि फुटपाथ पक्के कर दिए गए।

क्योकि भूमिजल का दोहन बढ़ गया है।

कृत्रिम रिचार्ज

जब हमारे शरीर में पानी की कमी से डिहाइड्रेशन उल्टी, दस्त इत्यादि होता है तो शरीर को रिहाइड्रेट करने के लिए तकनीक उपलब्ध है।

१. इनडाइरेक्ट तकनीक-इसमें ओरल घोल ओ आर एस ,निम्बू शिकंजी है। शरीर को रिचार्ज या रिहाइड्रेट किया जाता है यह ठीक उसी तरह है जैसे खुली जमीन पर पानी गिरने होता है या ऐसी तकनीक जिसमें वर्षा जल धीमे धीमे भूमिजल में समाहित हो जाता है।

२. डायरेक्ट तकनीक

इस तकनीक को सेंट्रल ग्राउंड वाटर बोर्ड़ द्वारा मान्यता मिली हुई है। देवास वाटर फिल्टर तकनीक के माध्यम से छत पर गिरने वाला वर्षा जल इस फिल्टर के माध्यम से सीधे भूमि जल में मिल जाता है।

क्या है देवास वाटर फिल्टर तकनीक-

पहिले छत के सारे नाल्दे यानि वर्षा जल आउटलेट को आपस मे जोड़ देते हैं जो पी वी सी या सीमेंट पाइप के हों। फिर इस एक पाइप को फिल्टर से जोड़ देते हैं जिसके आगे एक ड्रेन वाल्व होता है, जिससे पहली-दूसरी वर्षा का छत का गंदा पानी बाहर निकाल देते हैं और जब इसमें से साफ पानी आने लग जाता है तब इसे बंद कर देते हैं। अब फिल्टर का दूसरा वाल्व खोल देते हैं तो अब आने वाली वर्षा को इस फिल्टर के माध्यम से पास होने देते हैं जो अपने बोर-वेल,हैंड पंप से जुड़ा रहता है तो अब ये वर्षा जल सीधा

यह एक मॉडल है, जिससे छत के वर्षा-जल को एकत्र कर ट्यूबवेल को चार्ज किया जा सकता है अथवा एक टंकी में एकत्रित किया जा सकता है।

बोरवेल में उपस्थित भूजल में मिल जाता है। इससे

१. भूजल स्तर बढ़ता है।

२. भूजल की क्वालिटी सुधरती है।

३. टी डी. एस. कम होती है।

४. जल जनित बीमारियाँ कम हो जाती हैं।

कितना पानी भूजल में

एक गणना के अनुसार १ हजार वर्गफीट पर १ सेंटी मीटर वर्षा होने पर एक हजार लीटर पानी भूमिजल में जायगा। अर्थात् २००० वर्ग फीट पर ५० सेंटीमीटर राजस्थान की

औसत वर्षा होतो इस बोरवेल में एक लाख लीटर शुद्ध जल हमारे ट्यूब वेल में जायेगा। जिसकी कीमत बाजार में २० लाख रुपये होगी,२० रुपये की एक बोतल के हिसाब से।

रख रखाव

सामान्यतः इसमें कोई रख रखाव की जरूरत नही पड़ती है, पर वर्षा के बाद एक बार बैक वाश करलें ताकि इसकी सफाई हो जावे।

कीमत

मात्र ८ हजार में ये देवास वाटर फिल्टर सिस्टम उपलब्ध होता है। जो अगर सही रखरखाव किया जावे तो बीस वर्ष तक सुरक्षित रहता है।

सावधानियाँ

१. छत पर किसी तरह की गंदगी,पत्ते, केमिकल्स या कबाड़, नहीं रखें।

२. वर्षा के पहिले छत की अच्छी तरह सफाई कर लेवें।

अब तक कोई दो हजार बोरवेल, कुआ, बावड़ी हैंड पंप पर ये तकनीक पिछले बीस वर्षों से सारे देश मे मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक अपनाई जा चुकी है।

- डॉ. पी. सी. जैन (एम .बी. बी. एस.)
३, अरविन्दनगर, सुन्दरवास
उदयपुर (राजस्थान) मो. ९४१३०६२६९०

॥ ओ३म्॥
॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम्॥

आर्यन अभिनन्दन समारोह - २०१९

1. वैदिक वाङ्मय पर विशिष्ठ कार्य कर चुके विद्वान् एवं विदुषियाँ।
2. राष्ट्रपति अथवा किसी सरकार द्वारा सम्मानित आर्य विद्वान् एवं विदुषियाँ।
3. आर्यवीर दल एवं वीरांगना दल को शिक्षित करने वाले शिक्षक व शिक्षिकाएँ।

अपना पूर्ण विवरण अविलम्ब भेजें।

सितम्बर मास में दिल्ली में सम्मान समारोह सम्पन्न होगा।

पूर्ण परिचय निम्न पते पर शीघ्रातिशीघ्र भेजने की कृपा करें।

हमसे सम्पर्क करें।

ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट
A-4, द्वितीय फ्लोर, लाजपत नगर-द्वितीय, (निकट-मेट्रो स्टेशन), नई दिल्ली-110024
011-29842527, 011-45791152, 9599107207
Email- rashtranirmanparty@gmail.com

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०७/१९

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (अष्टम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१ ति	१	त १		२ वि	२	२	ल २	
३	र्य ३		४ ४ र	४	ण ४		५	ठ ५
६	स ६	६	ण ६		७ र ७	७	७	र ७

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. सृष्टि की आदि में आर्य लोग कहाँ से आकर आर्यावर्त में बसे थे?
२. आर्यावर्त्त के दक्षिण में कौनसी पर्वतमाला है?
३. धार्मिक, विद्वान् आप्त पुरुषों का क्या नाम है?
४. सबसे सूक्ष्म टुकड़ा जिसे और नहीं काटा जा सकता, क्या कहलाता है?
५. कितने परमाणुओं से मिलकर एक अणु बनाता है?
६. तीन द्वयणुक मिलते हैं तो क्या बनता है?
७. सब जड़-पदार्थ और जीव किसके आधीन हैं?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०५/१९ का सही उत्तर

१. परमेश्वर २. पृथिवी ३. अनेक ४. प्रलय
५. नहीं ६. युवावस्था ७. पक्षपात

''विस्तृत नियम पृष्ठ २६ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ अगस्त २०१९

मांसभक्षण के पक्ष में दिए जाने वाले कतिपय वेदमंत्रों पर विचार

वेद व वेदानुकूल शास्त्रों में मांसाहार का किंचित भी समर्थन नहीं है और न ही वेदानुयायियों की जीवन शैली में मांसाहार का समर्थन संभव है। वेद आर्यों की वरन सच कहें तो मनुष्य मात्र की आचार संहिता है। अतः वैदिक शिक्षाओं का पालन करना मनुष्य मात्र के लिए श्रेयस्कर है। 'सरिता' व ऐसी ही अन्य पत्रिकाओं में यह विषय उछाला जाता रहा है कि वेद में मांसाहार का समर्थन ही नहीं, वैदिक ऋषि तक मांसाहार करते थे। अहिंसा को धर्म का सर्वोच्च आदर्श मानने वाले, प्राणीमात्र को अपना मित्र बनाने की सदाशयता रखने वाले लोग, मांसाहार के लिए किसी की जान ले लेंगे यह कल्पना भी दुरूह है। फिर भी एक षड्यंत्र के अंतर्गत वेदों तथा अन्य शास्त्रों एवं वेदानुयायियों की जीवन शैली में मांसाहार को प्रदर्शित करने वाले लेख यदा कदा छपते रहते हैं। लेखिका मृणाल पाण्डेय जी का एक लेख मैंने आचार्य अग्निव्रत जी को समीक्षार्थ भेजा था पर लेख में वेदमंत्र का पता न होने से और न ही वेदमन्त्र छपे होने के कारण समीक्षा नहीं हो पायी। यहाँ विद्वद्वर आचार्य रामनाथ वेदालंकार जी का एक पुराना लेख प्रस्तुत है। निज स्वार्थ के लिए किसी लघु से लघु प्राणी की हत्या तो दूर उसे कष्ट पहुंचाने की कल्पना भी वैदिक जीवन पद्धति से बहिः है। मनुस्मृति आदि शास्त्रों के प्रक्षिप्त भाग को लेकर जो षड्यंत्र किये जा रहे हैं, आर्य समाज को उनका पुरजोर विरोध करना होगा। हमारी अहिंसा में गौ माता ही नही तुच्छ से तुच्छ जीव भी सम्मिलित है। – अशोक आर्य

'सरिता' १९८० के अप्रैल प्रथम अंक में 'वैदिक युग में मांसभक्षण'शीर्षक से एक लेख प्रकाशित हुआ था। इसमें लेखक ने मांसाहार के प्रमाणस्वरूप पांच वेदमंत्र उपस्थित किए थे। इसके अतिरिक्त मनुस्मृति, गौतमधर्मसूत्र, आपस्तम्बधर्मसूत्र, वृहदारण्यकोपनिषद्, याज्ञवल्क्यस्मृति और वाल्मीकि रामायण के भी कुछ स्थल देकर अपने पक्ष को सिद्ध करने का प्रयास किया गया था। इस संबंध में हमारा वक्तव्य यह है कि जहां तक ऋग्., यजु., साम. अथर्ववेद इन चार वैदिक संहिताओं का प्रश्न है उनसे मांसभक्षण का समर्थन नहीं होता है। न उनमें देवताओं को मांस खिलाने का विधान है, न मनुष्यों द्वारा मांस खाने का। मांसभक्षण के पक्ष में जो वैदिक प्रमाण दिए जाते हैं, वे वस्तुतः प्रमाणाभास ही हैं। स्वामी दयानन्द ने वेदों को ही स्वतः प्रमाण माना है। अन्य ग्रन्थ वहीं तक प्रमाण हैं, जहां तक वे वेदानुकूल हैं। वेदविरुद्ध होने पर प्रमाणरूप में मान्य नहीं हैं।

हम यह कहना नहीं चाहते कि भारत में कभी कोई मांसभक्षक रहे ही नहीं। अन्य कई व्यसनों के समान मांसभक्षण का व्यसन भी कभी प्रबलरूप में और कभी सामान्यरूप में प्रचलित रहा है, परन्तु उसे शास्त्रकार निन्दा की दृष्टि से ही देखते हैं। कहीं कहीं धर्मसूत्रकारों ने यह भी कह दिया है कि यदि मांस खाने से रुक नहीं सकते तो कम से कम अपवित्र पशु-पक्षियों का मांस तो न खाओ, परन्तु शास्त्रों की दृष्टि से आदर्श यही है कि मांस का सेवन सर्वथा न किया जाए। मनुस्मृति ने तो स्पष्ट कहा है कि भले ही कुछ लोग यह विचार रखते हों कि मांसभक्षण, मद्यपान आदि में कोई दोष नहीं है, परन्तु वस्तुतः इनसे निवृत्त रहना ही महाफलदायक

होता है-

न मांसभक्षणे दोषो न मद्ये न च मैथुने।
प्रवृत्तिरेषा भूतानां निवृत्तिस्तु महाफला।। - मनु. ५.५६

इस निर्देश के होते हुए मनुस्मृति में जो भक्ष्याभक्ष्य (किन्हीं विशेष जन्तुओं के खाने या न खाने) का प्रकरण है, उसे पूर्वापरविरुद्ध होने से प्रक्षिप्त ही मानना चाहिए। अतएव स्वामी दयानन्द ने प्रक्षिप्त श्लोकरहित मनुस्मृति को ही प्रामाणिक माना है।

अब रह जाती है बात वेदों की। सो मांसाहार के प्रमाण में सरिता के लेखक ने जो वेदमंत्र दिए हैं, उनकी क्रमशः परीक्षा करते हैं।

प्रथम मंत्र

अवर्त्या शुन आन्त्राणि पेचे न देवेषु विविदे मर्डितारम्।
अपश्यं जायाममहीयमानामधा मे श्वेनो मध्वा जभार।।
- ऋ. ४/१८/१३

सरिता के लेखक के अनुसार इस मंत्र में ऋषि वामदेव अपना अनुभव बता रहे हैं। चूंकि मैंने अन्य देवों में से किसी को भी सुखदायक न पाया इसलिए मैंने लाचार होकर कुत्ते की आंतें पकाईं। मैंने अपनी पत्नी को अपमानित होते भी देखा। तब इन्द्र, बाज पक्षी के समान उड़कर मेरे लिए मधुर सोमरस लेकर आया।

अब यहां विचारणीय है कि वामदेव को यदि ऐतिहासिक व्यक्ति मान लें तो विपत्ति या संकट (अवर्ति) में पड़े होने पर उसे कुत्ते की आंत पकाना क्यों आवश्यक हो गया? क्या ऐसी विपत्ति आ गई थी कि कुत्ते के अतिरिक्त कोई पशु, पक्षी, घास-पात, कन्द मूल आदि नहीं बचा था? फिर वामदेव के अन्य साथी भी तो होंगे, वे कैसे जीवित रहे? यदि वे किसी अन्य भोजन से जीवित रह सकते थे, तो वामदेव को भी वह भोजन सुलभ क्यों न हुआ? ये सब बातें इस ओर संकेत करती हैं कि मंत्रगत् 'शुनः आन्त्राणि' (कुत्ते की आंतों) का कुछ अन्य ही रहस्य है।

एक अन्य बात यह द्रष्टव्य है कि मंत्र में दो प्राणियों के नाम आये हैं- 'श्येन' (बाज) और श्वा (कुत्ता)। मंत्र में उलझन इस कारण उत्पन्न हो गई है कि 'श्येन' का अर्थ तो सायण ने और उसके अनुगामी सरिता के लेखक ने बाज न लेकर बाज के समान शीघ्रगामी इन्द्र ले लिया और 'श्वा' का अर्थ कुत्ता ही रहने दिया। तो मंत्र का वास्तविक रहस्य क्या है? 'वाम' का अर्थ है सुन्दर या प्रशंसनीय और 'देव' का अर्थ है तेजस्वी। सुन्दर, प्रशस्त, तेजोमय शरीर वाला मनुष्य वामदेव है। कभी दुर्भिक्ष पड़ जाने पर शाक, सब्जी, अन्न फल आदि उत्पन्न नहीं हुए हैं, जिनके पास कुछ अन्न संचित है वे भी वामदेव सदृश गरीबों की सहायता नहीं कर रहे हैं क्योंकि दूसरों की सहायता करने से अन्न समाप्त हो गया तो अपने प्राण संकट में पड़ जायेंगे। अब वामदेव बेचारा क्या करे? उसकी पत्नी भी इस विपत्ति में शोभाहीन हो गई है। वह 'श्वा' की आंतों को पकाकार खा लेता है, पर 'श्वा' से कुत्ता अभिप्रेत न होकर अपामार्ग या चिरचिटा अभिप्रेत है। अपामार्ग को आज भी ग्रामीण लोग कुकुरा (कुक्कुर) कहते हैं। इसकी शाखाओं पर कांटे-कांटे से खड़े रहते हैं, जो पास जाने वाले मनुष्य के वस्त्रों, टांगों आदि में चिपक जाते हैं। मानो वे अपामार्ग रूप कुक्कुर के दांत हैं, जिनसे वह काटता है। अपामार्ग की कांटों वाली शाखाएँ ही अपामार्ग रूप कुत्ते की आंतें हैं। उन्हें पकाकर खा लेने से क्षुधा नहीं सताती। अथर्ववेद में इस अपामार्ग को भूख प्यास का मारने वाला कहा है।

क्षुधामारं तृष्णामारमगोतामनपत्यताम्।
अपामार्ग त्वया वयं सर्वं तदपमृज्महे।। - अथर्व ४/१७/६

इस दृष्टि से देखें तो वामदेव के उक्त मंत्र का अर्थ इस प्रकार होगा मैंने (अवर्त्या) दुर्भिक्षरूप विपत्ति के कारण, क्षुधा निवृत्ति के लिए (शुनः आन्त्राणि) अपामार्ग को बीजों वाली शाखाओं को (पेचे) पकाया, पकाकर खाया, क्योंकि उस दुर्भिक्ष काल में (देवेषु) सज्जनों में किसी को भी (मर्डितारम्) सुखदाता एवं सहायक (न विविदे) मैंने नहीं पाया। (जायाम्) अपनी पत्नी को भी मैंने दुर्भिक्ष के कारण (अमहीयमानाम्) अशोभनीय अवस्था को प्राप्त (अपश्यम्) देखा, किन्तु यह विपत्ति की अवस्था सदा नहीं रही, (अथा) अन्ततोगत्वा (श्येनः) प्रशंसनीय गतिवाला वायु, पर्जन्य और सूर्य (मे) मेरे लिए (मधु) वर्षाजल (आजभार) ले आया। प्रचुर वृष्टि में दुर्भिक्ष का संकट समाप्त हुआ है।

अध्यात्म में वामदेव जीवात्मा है, क्योंकि वह स्वरूप से सुन्दर, प्रशस्त, निर्मल और तेजस्वी है। वह माता के गर्भ में आकर

शरीर धारण करता है। बुद्धि उसकी पत्नी है। कभी आत्मारूप वामदेव बुद्धि, मन, प्राण, इन्द्रियों आदि सहित दुर्गुणों एवं व्याधियों पर विजय पाता हुआ राजा के समान विराजमान होता है। परन्तु मंत्र में जिस दशा का वर्णन है , वह उसकी दारिद्र्योपहत दशा है। वह काम, क्रोध आदि के वशीभूत होने से विपदग्रस्त हो गया है और कुत्ते की आंतें पकाने लगा अर्थात् कुत्ते जैसा निन्दित आचरण करने लगा है। निरुक्त में कहा है कि- 'श्वा' 'काक' आदि शब्द निन्दार्थक होते हैं। 'श्वा काक इति कुत्सायाम् (निरु. ३. १८)।' आन्त्र का अर्थ है आचरण, कार्य या व्यवहार (अत सातत्यगमने)। पच धातु यहाँ करणार्थक है। आत्मा की जाया बुद्धि भी अशोभायमान हो गई है। इन्द्रिय, मन आदि देवों में से किसी को भी यह अपना सुखप्रदाता नहीं पा रहा है। परन्तु अन्त में 'श्येन' प्रभु की कृपा होती है। 'श्येन' का अर्थ है, प्रशंसनीय गतिवाला सर्वव्यापक परमात्मा। वह उस दुर्गति प्राप्त आत्मा केलिए मधु ले आता है। मधु के अर्थ हैं सफलता, विजय, अमरत्व, दिव्य आनन्द।

अधिदैवत पक्ष में चन्द्रमा वामदेव है, जो कि सौन्दर्य का मूर्तरूप है। आकाशीय रोहिणी तारा उसकी पत्नी है। जब आकाश में चन्द्रमा रोहिणी-शकट का भेदन करता है, तब अपूर्व शोभा होती है। परन्तु चन्द्रमा सदा ही परिपूर्ण नहीं रहता, न ही रोहिणी योग की अपूर्व छटा सदा रहती है। मंत्र का वामदेव कुश कलाओं वाला दुर्गति प्राप्त चन्द्रमा है। वह स्वयं भी दरिद्र हो गया है और उसकी जाया रोहिणी भी दरिद्र हो गई है। आकाश में एक श्वान नक्षत्र पुंज है, जिसे अंग्रेजी में डॉग स्टार या कैनिस मेजर कहते हैं। उधर चन्द्रमा और रोहिणी आभारहित हो रहे हैं और इधर श्वान नक्षत्र पुंज की आंतें चमक रही हैं। मानो चन्द्रमा उन आंतों को पका रहा है। पर चन्द्रमा की क्षीणकाय अवस्था शीघ्र ही दूर हो जाती है। श्येन उसे मधु प्रदान कर देता है। श्येन है सूर्य जिसके प्रकाश रूप मधु को पुनः पाकर चन्द्रमा पुनः परिपूर्ण और प्रफुल्ल हो जाता है। **क्रमशः.....**

– आचार्य रामनाथ वेदालंकार

जो करता संघर्ष हमेशा,
दुःख से नहीं घबराता है।
वही सफल होता इस जग में,
मंजिल अपनी पाता है।।

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष – न्यास

सत्यार्थ सौरभ घर-घर पहुँचावें

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार ₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें "सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

The space women

कथा सरित

Kalpana Chawla was the first Indian-born woman who travelled in space as an astronaut. She was born on 1st July 1961 in Karnal (Haryana-India). She was youngest of four children.She had great interest in space sciece since her childhood.One day when Kalpana's father came home, she asked him few questions,? Papa how do planes fly?, how do they stay up in the sky". Her father did't answer at that time but next day he called a friend from Karnal flying club. His friend managed to arrange a tour for them. When they got there, Kalpana asked the same questions she asked her father. As an answer to her questions, he flew them on a plane over Karnal. That day Kalpana discovered her love for flying.

Kalpana Chawla obtained a degree in aeronautical engineering from Punjab Engineering College.On her first day, one of the professor asked them what they wanted to do with their degree. When it was Kalpana's turn she said she wanted to become an astronaut. Detailing her interest she continued, "Astronauts go to moon, I want to go to moon too". After getting her degree she went to USA and there she completed her Masters degree from the University of Texas . Then she earned a doctorate in aerospace engineering from the University of Colorado in 1988. Same year she joined NASA (National aeronotics space administration), as an intern.

Kalpana's first opportunity to fly in space came in November 1997 .On her first mission she went with the crew of six as a right hand arm operator.

After few years,in 2003, she went as a mission specialist with a crew of seven.

They spent 16 days in space and performed 80 experiments. Kalpana talked to the Indian Prime Minister I. K. Gujral describing the starry night and thunderstorms flashing on earth. "It was like a story book", she said.

It was 1st February 2003 when this sad disaster occurred, in which we lost our Kalpana with six other Astronauts. What happened? When Columbia left earth, a piece of foam insulation that protected the space ship from getting extreme hot, broke apart tearing a hole in the left wing. When they were returning towards Earth, hot gases entered the damaged wing and in just 73 seconds the space ship blasted and everyone on board were killed.

The University of Texas dedicated a Kalpana Chawla memorial at the Arlington College of Engineering in 2010.

In India, Kalpana Chawala memorial planetarium was established on 24th July 2007 in Kurukshetra by Haryana State Council for Science and Technology, in the memory of her great daughter.

(Asmi is a Grade V student. She is granddaughter of Shri Ashok Arya, the editor of Satyarth Saurabh. She has great passion for reading and writing. Here is her small attempt)

Asmi Agrawal, Udaipur

समाचार

आर्य वीरों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन

मगरा पून्जला स्थित आर्य समाज मन्दिर, महर्षि पाणिनिनगर के १५ दिवसीय चरित्र निर्माण शिविर का समापन हुआ। प्रधान कैलाश चन्द्र आर्य ने बताया कि कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीमति चन्द्रकान्ता भाटी, विशिष्ठ अतिथि, श्रीमति देवी परिहार, श्री मदनलाल तंवर थे। शिक्षिका

सुश्री अदिति आर्या ने बच्चों को आसन, प्राणायाम, जूड़ो, कराटे, लाठी, सूर्य नमस्कार का प्रशिक्षण दिया। जयकुमार, समीर द्वारा बच्चों को जिम्नास्टिक का प्रशिक्षण दिया गया। इस शिविर में ६० बच्चों ने भाग लिया। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री सेवाराम आर्य ने बच्चों को वैदिक संस्कृति से जुड़ने का लाभ बताया और पाश्चात्य संस्कृति से दूर रहना और माता-पिता की आज्ञा का पालन करने का संदेश दिया। मंच संचालन शिवराम आर्य ने किया। अन्त में प्रधान कैलाश चन्द्र आर्य ने सभी आगन्तुकों को धन्यवाद दिया।

- कैलाश चन्द्र आर्य, प्रधान मो. ६४६००८३१३३

राष्ट्रीय कन्या चरित्र निर्माण व योग शिविर

८ जून २०१६ (टिटौली)। बेटी बचाओ अभियान, युवा निर्माण अभियान व स्वामी इन्द्रवेश फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय कन्या चरित्र निर्माण व योग शिविर के तीसरे दिन

खेल व स्वास्थ्य जगत् की हस्तियाँ बहनों को जागरूक करने के लिए पहुँची। जिनमें ३२ बार भारत केसरी का खिताब जीतने वाली अंतर्राष्ट्रीय कुश्ती खिलाड़ी सुमन कुण्डू, कायनोज हॉस्पीटल से डॉक्टर कीर्ति दहिया, जिला महिला एवं बाल संरक्षण अधिकारी करमिन्द्र कौर मुख्य रहीं। सुमन कुंडू ने खेल से सम्बन्धित अपने अनुभव साझा किए तथा बताया कि मेहनत व आत्मविश्वास ही सफलता की नींव हैं। डॉ. कीर्ति दहिया ने बच्चों को बताया कि आज डिप्रेशन व आत्महत्या का सिलसिला सिर्फ इसलिए बढ़ रहा है कि बच्चे अपने माता-पिता के साथ अपनी बातें साझा नही करते। करमिन्द्र कौर ने कहा कि आज भी लिंग भेद महिलाओं के लिए बहुत बड़ी चुनौती है। बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष पूनम आर्या ने शिविरार्थी बहनों को एक नए अंदाज में समझाते हुए ईश्वर एवं योग के विषय में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि हम अपने साथियों की मिसकॉल पर तो प्रतिक्रिया देते हैं लेकिन जब ईश्वर की मिसकॉल आती है तो हम उसे अनदेखा कर देते हैं। जब हम कोई भी गलत कार्य करते हैं तो हमें भय, लज्जा व शंका उत्पन्न होती है और जब भी कोई अच्छा कार्य करते हैं तो हमें उत्साह होता है यही परमात्मा की मिसकॉल है। इस पर ध्यान देंगे तो हम जीवन में हमेशा आगे ही आगे बढ़ेंगे।

कार्यक्रम की संयोजक प्रवेश आर्या ने बताया कि प्रशिक्षण का कार्य भी सुमन आर्या, राजकुमारी आर्या के अतिरिक्त प्राची आर्या, किरण आर्या, रिंकू आर्या, पूजा आर्या, पूनम आर्या, अंजली आर्या आदि की टीम ने बखूबी संभाल रखा है।

- प्रवेश आर्या ९४१६६३०९१६

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने अयोध्या शोध संस्थान व कोदण्ड राम मूर्ति पर जारी किया विशेष डाक आवरण

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने अयोध्या शोध संस्थान के संग्रहालय में कर्नाटक शैली की कोदण्ड राम मूर्ति का एक भव्य कार्यक्रम में अनावरण किया। इस अवसर को यादगार बनाने हेतु मुख्यमंत्री ने भारतीय डाक विभाग द्वारा अयोध्या शोध संस्थान, तुलसी स्मारक भवन पर एक स्पेशल कवर व कोदण्ड राम की मूर्ति के अंकन वाला विशेष विरूपण उत्तर प्रदेश के संस्कृति मंत्री लक्ष्मी नारायण, उत्तर प्रदेश के चीफ पोस्टमास्टर जनरल विनय प्रकाश सिंह, लखनऊ मुख्यालय परिक्षेत्र के निदेशक डाक सेवाएँ कृष्ण कुमार यादव, तथा अयोध्या शोध संस्थान के निदेशक वाई पी सिंह की उपस्थिति में जारी किया। इस अवसर मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने भारतीय डाक विभाग द्वारा जारी स्पेशल कवर एवं विशेष विरूपण की सराहना करते हुए कहा कि भगवान राम कण-कण एवं सभी के दिलों में वास करते हैं। डाक विभाग द्वारा जारी स्पेशल कवर के माध्यम से विश्व भर के श्रद्धालुओं की अयोध्या आने में रुचि पैदा होगी।

आर्यसमाज जोधपुर का १३६ वाँ वार्षिक महोत्सव संपन्न

आर्य समाज जोधपुर का वार्षिकोत्सव दिनांक ३० मई से १ जून २०१६ के मध्य भव्यरूप में संपन्न हुआ। वैदिक विद्वान् आचार्य योगेन्द्र जी (होशंगाबाद) एवं श्री मोहित शास्त्री (बिजनौर) ने अपने प्रवचनों व भजनोपदेशों से उपस्थित श्रोताओं को लाभ प्राप्त कराया। ३० मई को प्रातःकाल प्रधान श्री विजयसिंह भाटी के करकमलों द्वारा ध्वजारोहण के साथ महोत्सव प्रारम्भ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा प. राम नारायण शास्त्री थे।

- दुर्गा दास वैदिक

हलचल

विश्व पर्यावरण के अंतर्गत आर्य समाज कोटा द्वारा यज्ञ का आयोजन

दिनांक २ जून २०१९ को श्री अर्जुनदेव चड्ढा की प्रेरणा एवं कुशल नेतृत्व में पर्यावरण शुद्धि हेतु एक वृहद् यज्ञ का आयोजन आईएल टाउनशिप के परिसर में किया गया।

यज्ञ के ब्रह्मा आर. सी. आर्य, यजमान राकेश चड्ढा एवं अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। पानीपत से पधारे डॉ. कृष्णदेव शास्त्री ने यज्ञोपरांत यज्ञ की महिमा एवं आज के युग में तीव्र गति से बढ़ते प्रदूषण के निवारण हेतु यज्ञ के, हर घर में आयोजन हेतु उद्‌बोधन दिया। वार्ड पार्षद डॉ. विवेक राजवंशी, जनरल मर्चेंट एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री राकेश जैन, रोटरी क्लब राउंड टाउन के श्री विमल चंद जैन, श्री यज्ञदत्त हाड़ा (भारत स्काउट गाइड), राधा बल्लभ राठौर, लालचंद आर्य, भैरोलाल शर्मा, राजेंद्र मुनि, राजेंद्र कुमार गुप्ता, शैलेंद्र पारोतिया दंपत्ति, वीरेश आर्य, देवकरण बेनीवाल, रामगोपाल यादव, विष्णु गर्ग, पराग आदि आर्य जनों ने संयुक्त रूप से यज्ञ में आहुति प्रदान कर वातावरण को गरिमा प्रदान की।

आर्य समाज महावीर नगर कोटा प्रत्येक रविवार को विभिन्न पार्कों में यज्ञ का आयोजन कर पर्यावरण शुद्धि में अपनी भूमिका अदा कर रहा है।

– राधा बल्लभ राठौर, मंत्री आर्य समाज, महावीर नगर, कोटा

आर्य टेलीफोन डायरेक्टरी(कोटा क्षेत्र)का विमोचन

पूर्णिमा सत्संग समिति, कोटा के द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय पूर्णिमा महोत्सव में जहां आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री के प्रवचनों तथा प. दिनेश दत्त के भजनोपदेशों ने श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध किया, वहीं १६ मई २०१९ को श्री अनिल गुप्ता (पुत्र- स्मृतिशेष श्री लक्ष्मीकांत गुप्त- पूर्व प्रधान आर्यसमाज भीमगंजमंडी कोटा) के सौजन्य से प्रकाशित उक्त टेलीफोन डायरेक्टरी का विमोचन किया गया। इस अवसर पर वैदिक विद्वान् श्री शिवनारायण उपाध्याय एव कोटा क्षेत्र की आर्यसमाजों के अनेक प्रतिनिधि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संयोजन श्री राजेन्द्र सक्सेना ने किया। सफल संचालन का दायित्व श्री राजेन्द्र मुनि ने सम्भाला।

– राजेन्द्र मुनि , कोटा

स्वामी सर्वदानन्द जी का निधन

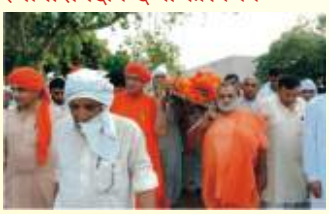

गुरुकुल धीरणवास, हिसार के कुलपति, वीतराग संन्यासी स्वामी सर्वदानंद जी का निधन लगभग ८९ वर्ष की आयु में ३ जून १९ को हो गया।

'धूल भरी आँधी ने मानो कोहराम मचाया है,
ना जाने वक्त ये कैसा सितम लेकर आया है।
हाँ, ये सत्य है, अमरत्व तो किसी हस्ती को नहीं मिला,
पर बसंत में ये पतझड़ कैसे आया है।।'

न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से प्रभु से प्रार्थना है कि वे स्वामी सर्वदानंद जी सरस्वती की आत्मा को मोक्ष प्रदान करें, शोक संतप्त शुभचिंतकों को संबल दें।

– भवानीदास आर्य , मंत्री–न्यास

स्वामी दिव्यानंद जी सरस्वती का निधन

आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान् संन्यासी वैदिक साधना आश्रम, तपोवन के संरक्षक डॉ. स्वामी दिव्यानंद जी सरस्वती का निधन ९१ वर्ष की अवस्था में २८ मई २०१९ को हो गया। उनका निधन आर्यजगत् की अपूरणीय क्षति है। न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से प्रभु से प्रार्थना है कि वे स्वामी सर्वदानंद जी सरस्वती की आत्मा को मोक्ष प्रदान करें।

– डॉ. अमृतलाल तापड़िया, संयुक्त मंत्री–न्यास

श्री रघुनाथ देव का दुःखद निधन

आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री रघुनाथ देव जी का निधन एक सड़क दुर्घटना में हो गया। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के जिला एटा के ग्राम लड़सिया में हुआ था। जब सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने का अवसर श्री रघुनाथ देव जी को लगा तो वे अध्यापक की नौकरी छोड़कर सर्वतोभावेन मिशनरी प्रचारक के तौर पर आर्य समाज से जुड़ गए। श्री रघुनाथ देव ने कई वर्षों तक न्यास से जुड़कर 'वेद रथ' के माध्यम से गाँव–गाँव में जाकर प्रचार की धूम मचा दी थी। उनके भजनोपदेश ग्रामीण अंचल में बड़े चाव से सुने जाते थे। उनका निधन आर्य जगत् की ऐसी क्षति है जिसे भरा जाना संभव नहीं। हम परमपिता परमात्मा से विनय करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी आनंदमयी गोद में स्थान प्रदान करें तथा शोक संतप्त परिजनों को धैर्य धारण करने का बल प्रदान करें।

– अशोक आर्य, उदयपुर

सत्यार्थ प्रकाश पहेली – ०५/१९ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली– ०५/१९ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं– श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती उषा आर्या; उदयपुर (राज.), डॉ. राजबाला कादियान; करनाल (हरियाणा), परमजीत कौर; नारायण विहार, दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र प्रियदर्शन; सीतामढ़ी (बिहार), श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्री बाबूलाल आर्य; पिपल्यामण्डी (मन्दसौर), श्रीमती किरण आर्या; कोटा (राज.), श्री विनोद प्रकाश गुप्त; दिल्ली, श्रीमती निर्मला गुप्ता; फरीदाबाद (हरियाणा), श्री गोवर्धन लाल झंवर; आष्टा, श्री इन्द्रजित् देव; यमुना नगर (हरियाणा), श्री हर्षवर्द्धन आर्य; नेमदारगंज, श्री श्याम मोहन गुप्ता; इन्दौर (म.प्र.), श्री देवेन्द्र कुमार (डॉ.); भीलवाड़ा (राज.), श्री अनन्त लाल उज्जैनिया; टी.टी. नगर (भोपाल), श्री राज नारायण चौधरी; शाजापुर, श्री सोमपाल सिंह यादव; शामपुर, श्री महेश चन्द्र सोनी; हनुमान जी मन्दिर के पीछे (बीकानेर), प्रधान; आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग (बीकानेर), उषा देवी सोनी; बागड़ी मोहल्ला (बीकानेर), श्री यज्ञसेन चौहान; बिजय नगर (राज.), श्री जीवनलाल आर्य; दिल्ली, सुनिता सोनी; जेल रोड़ (बीकानेर), रूपादेवी सोनी; पंचायत भवन के पीछे (बीकानेर), श्री ज्योती कुमारी; डेरोली अहीर, श्री गणेशदत्त गोयल; बुलन्द शहर, श्री ब्र. विशाल आर्य; गुडा विश्नोईया, श्री किशनाराम आर्य; बिल्लू, श्री रमेश चन्द्र राव; मन्दसौर, श्री भंवर लाल पारीक; रायला, श्री पं. हरि नारायण; देवास, श्री हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.)। सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य– पहेली के नियम पृष्ठ २६ पर अवश्य पढ़ें।

सत्यार्थ-पीयूष

तैंतीस देव

महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास में शास्त्र प्रसिद्ध ३३ देवों की गणना इस प्रकार करते हैं- तैंतीस देव अर्थात् पृथिवी, द्यौ, अग्नि, वायु, अन्तरिक्ष, चन्द्रमा, सूर्य और नक्षत्र सब सृष्टि के निवास स्थान होने से ये आठ वसु, प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान, नाग, कूर्म्म, कृकल, देवदत्त, धनंजय और जीवात्मा ये ग्यारह रुद्र इसलिए कहाते हैं कि जब शरीर को छोड़ते तब रोदन कराने वाले होते हैं, सवंत्सर के बारह महीने 'बारह आदित्य' इसलिए हैं कि ये सबकी आयु को ले जाते हैं, बिजली का नाम 'इन्द्र' इस हेतु है कि परम ऐश्वर्य का हेतु है। यज्ञ को प्रजापति कहने का कारण यह है कि जिसमें वायु, वृष्टि, जल, औषधी की शुद्धि, विद्वानों का सत्कार और नाना प्रकार की शिल्प विद्या से प्रजा का पालन होता है। ये तैंतीस पदार्थ पूर्वोक्त गुणों के योग से 'देव' कहाते हैं। इनका स्वामी और सबसे बड़ा होने से परमात्मा चौतीसवाँ उपास्य देव शतपथ के चौदहवें काण्ड में स्पष्ट लिखा है।'

इस प्रकार महर्षि दयानन्द उन पदार्थों को जो दिव्य गुणों से युक्त हैं देवता मानते हैं।

बहुदेवतावाद की वास्तविकता-

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः॥

- ऋ. १/१६४/४६

विद्वान्जन उस एक ही परम् सत्तावान अग्नि (सर्वगतिदाता) परमेश्वर को इन्द्र, मित्र और वरुण आदि अनेकानेक नामों से पुकारते हैं। वही दिव्य, सुपर्ण और गरुत्मान् नाम वाला है। उसी को अग्नि, यम और मातरिश्वा कहते हैं।

महर्षि ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में देवता सम्बन्धी एक अन्य भेद प्रस्तुत करते हैं- शरीरी तथा अशरीरी । माता, पिता, आचार्य, अतिथि शरीरी देवता हैं जबकि परमेश्वर अशरीरी। पाँचों की यथायोग्य पूजा ही पंचायतन पूजा है।

यहाँ अवश्य स्मरण रखना चाहिए कि उपासना का अर्थ है समीप बैठना। जिसके समीप हम बैठेंगे उसी के गुण हमें प्राप्त होंगे। यह भी ध्यातव्य है कि यह मान भी लिया जावे कि नाना प्रकार के मिथ्या कर्मकाण्डों से देवों को प्रसन्न कर उनकी कृपा प्राप्त की जा सकती है तो भी जिसके पास जो कुछ होगा वही दे सकेगा। अन्य वस्तु नहीं। कपड़े के दुकानदार से वस्त्र प्राप्त हो सकता है हल्दी नहीं इसी प्रकार किराना व्यापारी से हल्दी मिल जायेगी वस्त्र नहीं। अतः भली भाँति समझ लेना चाहिये कि याचक जीव है जो सत् भी है और चैतन्य भी। उसे आनन्द की तलाश है। जीव के अतिरिक्त दो अन्य सत्ताएँ हैं एक जड़ पदार्थ (जड़ देव) जो केवल सत् हैं। न उनके पास चैतन्यता है और न ही आनन्द। परन्तु दूसरी सत्ता ईश्वर सच्चिदानन्द है अर्थात् सत् भी है, चैतन्य भी है और आनन्द का भण्डार भी है। अतः आनन्द की प्राप्ति केवल सच्चिदानन्द परमेश्वर की उपासना से हो सकती है। जड़ देवताओं की उपासना से तो अपने पास की चैतन्यता चले जाने का भी पूरा-पूरा भय है। जिस प्रकार करोड़पति समझ एक भिखारी से एक लाख रुपये माँगने पर वह कहेगा कि मेरे पास तो एक पैसा भी नहीं है आपके पास एक हजार तो हैं इनमें से सौ रु. मुझे दे दो। यह हुआ उलटे बाँस बरेली लदना। आज संसार में मूर्खता और अन्धविश्वासों में वृद्धि का यही कारण है।

वस्तुतः सूर्य, वायु, जल आदि देवों की पूजा का तात्पर्य और प्रकार है ऐसा कोई कार्य न करना जिससे वे प्रदूषित हों, उन्हें शुद्ध, समर्थ रखने के प्रयास करना तथा उनका यथायोग्य प्राणिमात्र के उपकार करने में उपयोग करना। चैतन्य देवों में माता, पिता, अतिथि आदि का मान, सम्मान, सत्कार तथा उनसे सदुपदेश ग्रहण करना ही उनकी पूजा है। परमात्मा की उपासना अष्टांग योग के मार्ग का अवलम्बन कर निज के समस्त उत्तम कर्मों को भगवद् अर्पित कर देने से होती है।

- अशोक आर्य
नवलखा महल, गुलाब बाग

श्री सत्यनारायण शर्मा आपकी प्रिय पत्रिका सत्यार्थ सौरभ के संरक्षक बने।

श्री सत्यनारायण शर्मा, निवासी हिरणमगरी से. ३, उदयपुर ने 'सत्यार्थ सौरभ' से अत्यंत प्रभावित हो इसके प्रकाशन को आर्थिक संबल प्रदान करने हेतु पत्रिका की संरक्षक सदस्यता ग्रहण करते हुए 11000 रुपये का सात्विक सहयोग प्रदान किया है, हार्दिक आभार। अन्य सज्जन भी इससे प्रेरणा प्राप्त करेंगे ऐसी आशा करते हैं।

- भवानी दास आर्य, प्रबंध सम्पादक, सत्यार्थ सौरभ

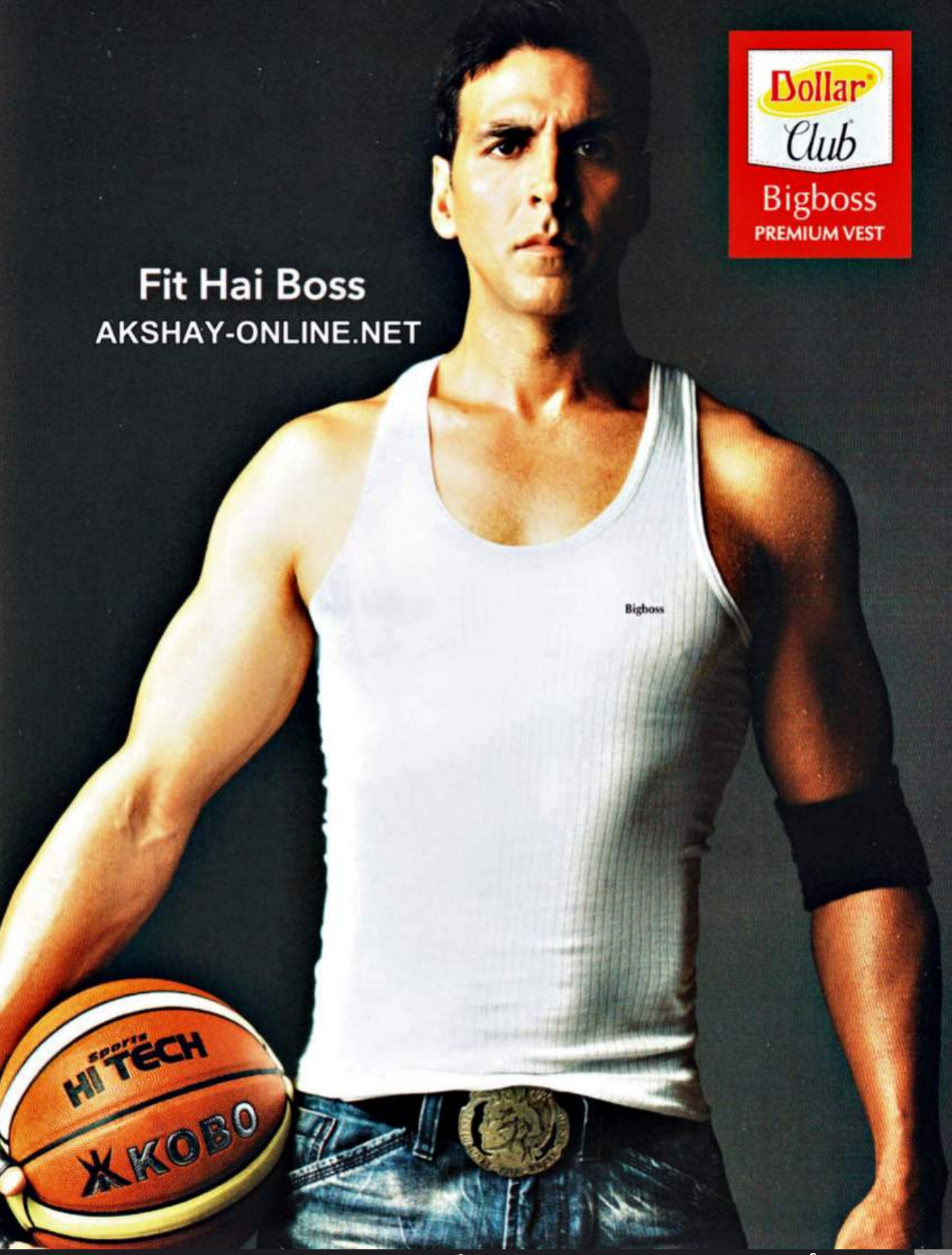
Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss
AKSHAY-ONLINE.NET
Bigboss
Sports
HI TECH
KOBO

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 July-2019 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2019-2021

(राजा) इस पर नित्य ध्यान रक्खे कि जहाँ तक बन सके, वहाँ तक बाल्यावस्था में विवाह न करने देवें। युवावस्था में भी विना प्रसन्नता के विवाह न करना-कराना और न करने देना। ब्रह्मचर्य का यथावत् सेवन करना। व्यभिचार और बहुविवाह को बन्ध करें कि जिससे शरीर और आत्मा में पूर्ण बल सदा रहै।

– सत्यार्थ प्रकाश
षष्ठ समुल्लास पृष्ठ १७६

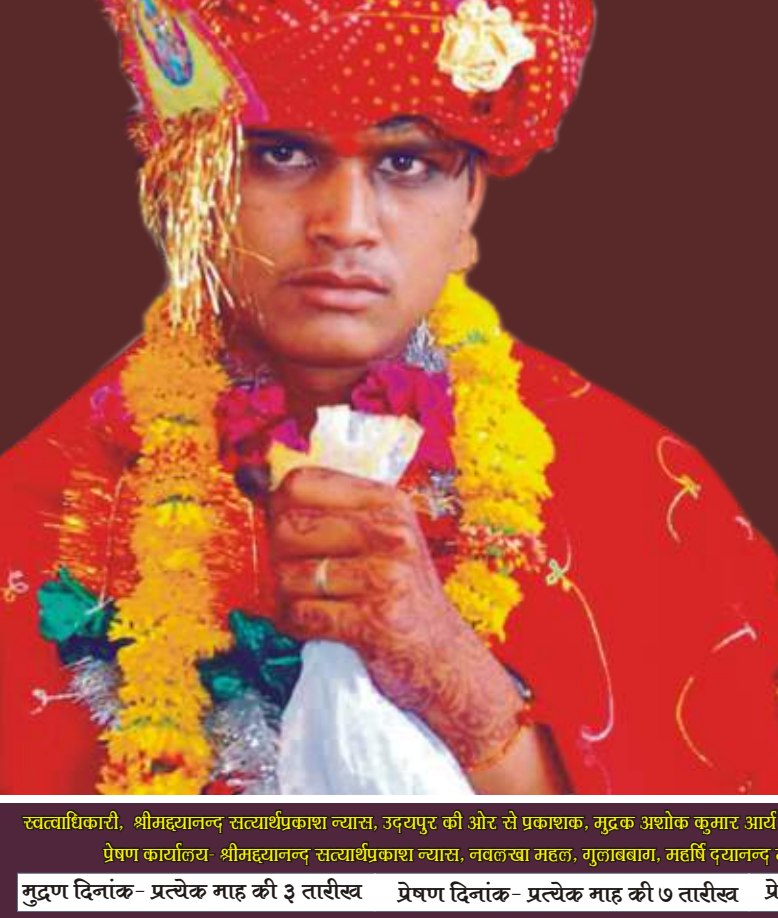

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर